सम अङ्क बोधि चितां लगी हिरदे तिर यां बां दि ॥४॥ कुवार
सु एक तर है नित शोक करै बिचार । कोक न्यां कित सुतें
ल ॥ बोर जाऊं किस द्वार ॥५॥ चौपई इस कारन ब्रह्मा पै जा
सु न र सब अपनी बात सुनाऊं मो ताग नसु तद है अकना
र को ॥ मै पूत जा यं गुसांई चल्यो चल्यो ब्रह्मा पै आयो गोहृ
संग वे ॥ कै सीस निवा यो ॥ ब्रह्मा बहुत क आदर कीनो
डा सु ॥ र न आग्य सदी नो ॥ कहो रिषीस्वर कैसे आये ॥ को
रु उदो ॥ कारज क्या साप ॥ इन्द्री जित और तुम निरबासी ॥ कै
फिर ज ॥ हमरे पास ॥ कहो उदालक सुनहो नाथा ॥ इक बा
जै है ॥ ऊं मा थ्या ॥ यह पर संग पूछन कूं आ ऊं ॥ मेरे संप
आ वै त ॥ ता ऊं ॥ ६२ ॥ ब्रह्मो वाच दोहा ॥ तब ब्रह्मा
क मैं न र
रासी मांहे सुन हो यही बिचार तेरे पुत्र न हो य गा बैस
हि जावै ॥ र बचन हमा राखें वहि ही रहे सा ष निहार ॥६॥
जाइ ता ॥ आय है ता के पीछै नार ॥६६॥ सोई सुतार घुबंस

कापतिबरताधर्मसूप ॥ जोसबढाव नहारहा सुदरऋषिक
५ ऋनूप ॥ ४५ ॥ देखदशा अबजाइयै अपनें आ[illegible]मो हि प
रजापतिकरतार मैं तू चिंता करनाहीं ॥ ४६ ॥ उद्दालको
वाच चौपई ॥ रिषनैं कही जौरकरिहोई ॥ नारी बिनापुत्रक
सहोई ॥ असीकही नईबिपरीता ॥ पाहै नारी पहलैपुत्ता ॥ म
ध्याबचन करी तुमहांसी ॥ मैं सुकचा मन नया उदासी ॥ उ
द्दालकके बचन सुनैंजब ॥ बिधकों अंतरध्यान नयेतब ॥ ग
या देषब्रह्मांकूं छांई ॥ रिषआया आस्रिमलके मांही ॥ अपनेम
नमैं कैसे ताकी ब्रह्मां हमसें झूठी नाषी ॥ कौनभांति बनहै
यहबाता ॥ पहिलै पुत्रपाहै बनिता ॥ सोच सोच नयाअ
धिक उदासा ॥ उद्दालककहै चरन नहीं हासा ॥ ४७ ॥ इति श्रीभास
जीतगुसांईजीकृत उद्दा
लकपाख्याने श्रीरनजी
कविंतावली नोनाम प्रथमो अध्याय ॥ बैसंपायनै
चदोहा ॥ बैसंपायन मोंकही है राजा बैजाग जांनत होस

५

वशा स्त्रैं ना ख्यपंअनुरागा १ वहबहसंग आन्ति ता... ता
रलागा त... आन। परम पुरष की धार नां हिरदे मांही ध्या ने रा
चौपई। नारी की मन आसा रहै काऊ सें मन की नहीं कहै। रा
तदिनां चिंता मन मांही। छिन १ कतिया... ल त नांही। सब
तन कां मजगै दुषदई॥ जैसे सूता सिंघ जगाई॥ ३ सीबास नां
बीज बिसाही। होनहार की यही दिसा ही। वह बी रज कर मां
ही लीनां। कंवल फूल मांहि धरदीनां। मुंदगया कुमां मा
हि लिपटाया॥ फिर वह गंगा बीच बहाया। बुसांजू की अज्ञा
हया। तेरा कंवल जू बाह तान्तया। आगे सुनौं कहै रन जी
ता॥ जैसें कारज नयापुनीता। दोहा। नगर एक सुहावना
गंगा नीकट सुथान। राजा रघु कां काथ नी तेजवंत जैसें भान।
राजा रघु नें रघु हाथ कांथ... — गंगा नीकट सुथान। राजा रघु कांकाथ नी तेजवंत जैसों भान।
गंगानीकट सुथान। राजा रघु कां काथ

...नवंतेसुंदर नरलोई॥ बढ़ी ... ...ग न कोई॥ रा
आजितकारघुसतवादी॥ निरकंटकै निर्भै जिहूगादी॥ सूर
बीर दाता सुषदाई॥ जाकी जगमै अधिक बढ़ाई॥ चंद्रवंती
थी पुत्री ताकी॥ धुर सूं कथा कहुं मैं वाकी॥ जनरनजी तक देहु
न लाजै॥ सब हूं ओपतास्योंछि तरी जै॥ परोहा सुंदर मंदर सोह
ना दिप तबिराजहु॥ नास चूंनेली पासे तहां॥ जितकन्याका बा
स ह॥ बोध ह॥ रंग महल जहां चितरकारी॥ ऊंचा महल झरो
षे बारी॥ महासुंदरी कंचन बरनी॥ सुघड़ चतुर देषत मनहर
नी॥ नषसिष जौं बि धआप संवारी॥ गुनवंती अरु रूपउ
जियारी॥ देवि योबिषै न कन्या ऐसी॥ गंध बीयोंबिषै न कहि
यै जैसी॥ आसुरी ... बिषै सुदेषी नाहीं॥ नां कहियै तिरलोकी
मांहीं॥ वैसा रूप न कहुं वा न होगा॥ बा कन्या कै जोगा न जोगा
बड़ी अरु मन चार पिवा नौं॥ रंन्ता ओर उरबसी जानौं॥ और
तिरलोत मां तीजानारी॥ अरु मैनका चौथी प्यारी॥ ७ दोहा
० जो चारैं अपसरा सूगीही मांहि अनूप ऊन सैंबी नहुं तैस सै

वाकन्याकारूप ८ चौपई॥ इसहजारढीगकन्याओरी॥ वाकेपा
सरहैकरजोरी॥ सोवहकन्यासषियेंसाथी॥ परणबांधगंगा
नितन्हाती॥ न्हायसदाहीनौंजनकरती॥ सषियेंसहितसुषिजो
रहीती॥ एकदिनोंओसोगतिन्हई चढीसुषपालगंगकूंगई॥ नांती
नांतिकेभूषनसाजे॥ भ्रतियनकेगलहारबिराजै॥ आगेपिछेदहनै
वादै॥ चढीतुरंगनकेन्याजावै॥ कोईकोईधुजाचंवरकरधा
रै॥ बसतरभूषनरूपसंवारैं॥ ९ दोहा॥ बाजेबहुतकसंगबजतअरु
गावतहीगीत॥ नगारसैंनिकसीचलीजोथीनितकीरीत॥ १०
चौपई॥ जापुंहचीगंगातटठाई क्रीडाकरनलगीजलमांही॥ बहुस
वाभूरनसुन्नलन्ननधारी रूपप्रकासरहीहैन्यारी गंगाजीमैठा
ढीहुई॥ उसीपदमकूंदेषतभई॥ दिव्यसुगंधजुतैरतजावै॥ सू
ऊंचंवरकीरनसमीवे॥ नरक्याभूयसकैसोवाकूं॥ केवलजोतेज
वंतहैताकूं॥ कन्यादेषअचंभैरही॥ निजसषियनसूंऔसैकही
ऽसीफूलकेनिकटैजावो॥ पकडहाथसूंमोपेल्यावो॥ अरुजोसंक
ल्पागहिल्याई॥ चंदवतीतीनैहरषाई॥ ११ दोहा॥ कुसमामांदिसूं

षोलकरिसूंघानांकललगाव॥ उसमैंजोबीरजकूंतापैठाना
6 नमंझाय॥१२॥चौपई॥ सखियांसहितनहायकरिआई॥ जानीना
हरिकीचतुराई॥ पहिलेमहीनेफूलजोआये॥ दूजेमासअंगपल
टाये॥ मासतीसरेमोटीकाया॥ चोथेउदरबडाहोआया॥ पचवें
रोमपलटजोगए॥ अस्थानकखुस्यामजोनए॥ छठेंसातवेंअसा
नया॥ पेटजुबडाबहुतहोगया॥ कन्याउदरदेषनईबोरी॥ तेज
तिहनयागतिमतिओरी॥ सकलविकलमनब्याकुलनैंना॥
सोकसिंधमैंपरीअचैना॥ धीरजतजकैरोवनलागी॥ चरनदास
कहैदुषमैंपागी॥१३॥दोहा॥ निजकन्याषवनलगीहेसुनकोरे
वंत॥ सुषदीनेकरतारनैंदुषककुक्यदहोवंत॥१४॥ हमैंबतावोबे
गहीतनमनमैंउकलंत॥ तुमकूंरोवतदेषकरिहमकूंकष्टआ
नंत॥ सषियोंकेसुनबचननहींरोवतउतरदीन॥ कहूंअबवेने
कीसचीअवरजहींकूंचीन॥१६॥ चौपई॥ मैंकुलमाहिंअकी
रतवारी॥ नईसुनोरीसषिपियारी॥ औरदुषनरघुबंसमं
झारी॥ अहिष्टगर्ननमोहिनयोबिकारी॥ मैनहीजानूंक्याहे
गया॥ नारीदुषयहुवमांहिहांवनगया॥ अबरुदेषोरघुमदलौंमांहीं

देवतग्रायसकैकोइ नांही ॥ गंध्रपग्रसुरनग्रावनपावैं ॥ मनुषोंकीतो
कौनचलावै ॥ बाडाचंजचारी नेहै तीन लोकमेकुईन हो है ॥ सुन
केसषिसबे मुरझानी ॥ पीरेबदननई सबस्यानी ॥ मीडुन लगी
नुकरिसोकरहही ॥ इकदातोंबिच अंगुली धरिही ॥ दोहा ॥ ब्या
कुलहोकेतुरतही गई रानीकेपास ॥ हाथजोडठाढीनईहोकर
बहुतउदास ॥ १८ ॥ ग्रोरकहीजी रानदे तोहमकहैंसुनाय ॥ ग्रब
रजकी सीबातही कहतेजी वडराय ॥ १८ ॥ रानी ॥ कंचकी पई ॥
रघु रानी कही कन्याजानैं ॥ ग्रनेदानदियो निहचै मानें ॥ जण
जोग कछु कन्या ग्रबही ॥ कछु मतराषो नासो सबही ॥ जबकन्या
ग्रैसेकरिबोली ॥ कहिनहिंसकैंकहाकहैंषोली ॥ रानमषडेहोस
बतनकोषे ॥ ग्रवरजबातकहाकहुंतापे ॥ चंद्रवतीकेमहलों
मांही ॥ गंध्रपदेवतसकैंनग्राई ॥ मानुषकीनौसामर्थक्याहै ॥
उनमहलोंमेंग्राया वाहै ॥ ग्रैसी ठौरग्रचंभानया ॥ तुमहूरा
कन्याकूगर्भरह्या ॥ जबकन्या ग्रोंग्रैसेंकही ॥ रानीसुनदुषि
याबहुंनई ॥ २० ॥ दोहा ॥ ब्याकुलहोधरनी गिरि रहीनकछु

त
सज्जार॥ सोकुमादिपीडुलना॥ रघुराज कीनार॥२१॥ चौपई
उनकन्याग्रीता हिउठाया॥ धीरजदेता कूंबैठाया॥ रानी
८ कन्यासुकशतकीनैं॥ श्रीपगन्नरराजा मनदीनैं॥ जाराजा
पेबचनउचारे॥ सकलशास्त्र जानन वारे॥ स्वामी श्रनैदान
जा
जोपाऊं॥ तोग्रचरजकी बातसुनऊं॥ रा जोवाच॥ शुकतीग्र
नैतुमपावो॥ जप्याजोगं सबबात सुनावो॥ नृप बचनसुनरा
नीबोली॥ डरपसकच तीमुखसौषोली॥ रा नीवाच॥ कन्या
तुम्हरादुबतजानैं॥ चंद्रवतीग्रैसे पहिचानैं॥ जाकै गर्त्तेस्य
दिहनयाहै॥ मोपैकहनजा नकहाहै॥२२॥ दोहा॥ क्रोधवंतरा
या
जात्तसुनरानाकेबैंन॥ श्रौर कहाउनकाकियारकनव
रन नयेनैंन॥ चौपई॥ राजा सेवगलियेबुलाई॥ क्रोधवंत
है बातसुनाई॥ वाकंन्याकूं लेतुमजावो॥ जंगलमांहिछो
डकैग्रावो॥ सुनकरिशेवगग्रायसलीनैं॥ बनैंबासकन्या
कूं दीनैं॥ त्यानकजंगलग्रधिकउदासा॥ ब्या घुसिंघनव
जहावासा॥ दसौदिसा तयाकूं लगारी॥ कहैकिहि

बिषक्या बिपताडारी ॥ ऐसे अधीरह्वै रही कुवांरी ॥ ज्यौं हिर
नी संग सूं चूकई न्यारी कहूं रन जीत ह्वीये के मांही ॥ ऐसी दु
षी कहि सकूं नांही ॥ ३४ ॥ इति श्री नासकेतू पाख्याने चंद्रवती क
न्या त्यागो नाम द्वितीयोध्याय ॥ २ ॥ अथ बैशंपायनो बाच दोहा ।
ऐसे कन्या दुषिणी इतने ही के मांही ॥ फिर ता आया एक रि
षि करि दया की ॥ ब्रह्मचारी ॥ १ ॥ चौपई ॥ सत्त धर्म मैं पाकड़ पूरा ॥ त
प के मांही अधिक सूरा ॥ जिता जु प्राण के मांही ॥ लैन फूल
फल आया कांई ॥ उलटा जब आश्रम कूं चला ॥ लिये फू
ल फल कुंसा कपाला ॥ रोवत कन्या दिष्ट निहारी ॥ चक्रत
भयो कौन यह बारी ॥ जाग पकड़ चिंता कर देषा ॥ मन
मैं किया बिचार अनेका ॥ यह दमैं नती के घिरताची के
रंभा है सुंदर आछी ॥ के तिलोत्तमा चित्ररेषा ॥ के इं
द्राणी है जु मेनका ॥ देवसुता के राजकुमारी ॥ ऐसैं
सोच किया रिषभारी ॥ रदेहरा छबि गुण रूप अ
धिक ततासससि बदनी अधिकाय ॥ अंग अंग सुंदर
रसबै सोभा कही न जाय ॥ सुंदर बंन्या देषकरि

९ ॥ अचरज मन मैं लाय ॥ जाग्यवल्क पूछत भए अैसैं ब
चन सुनाय ४ चौपई ॥ हे कंन्या तु कित तैं आई ॥ है त
कौंन पिता को माई ॥ कौंन काज जंगल के मांही ॥ आ
प अकेली संग कोनां ही ॥ किंह राजन के गेह दुहिताई ॥
सो तो कूं भद्र एक कर जांहूं ॥ फिर कंन्या वहु अैसैं बोली
अपनी बिपत्त कही सब षोली ॥ हे ब्राह्मण या क्या ए
ही है मेरी मैं कुबेर नंद षी घनेरी ॥ राजा रघु की मैं हूं बे
टी ॥ पिछले पाप न मो हित लपेटी ॥ बिन जाने मैं भयो ग
र भद दुषारी ॥ पिता मोहि निरजन बन डारी ॥ सो कंवा
न सूं आतुर भारी ॥ दुष मैं पीडत हिये मां भारी ॥ पहुंचत
यों कंन्या के बचन सुन सुं दुषी भये रिष राय ॥ सब
ओं गन संत प्रते बोला फिर दुलराय ॥ ६ ॥ रि वाच १
हे देवी तूं धर्म की बेटी मैं करी आज मेरे आश्रम के बि
षैं चल कैं सदा बिराज ॥ ७ ॥ परमेश्वर हित तो वृत्ती त
हां कर के चित लाय ॥ कंद साग फल लाय के आगे धरं
जब प्रसन्न कै संग भई आई आश्रम मांहि
बनाय ॥ ८ ॥

...सक कैं रह नेलगी कोई अैसो नांहि ९

बडुन दिना रह तेंकि ओर ज ज ग्रो दस मास ॥ जब उ... ता
ईदेह संडष मानों बेड तास ॥ जब जानेंग परस तकासमा
जुघुईचा आय जब नवी सा रो सुकचसु प्रह्चीवन में जाय
११ चौपई ॥ गंगा जी पुन कांई बिराजे ॥ नि र्मल जल सुध अधिकी
राजै ॥ नमस्कार ... जा करि उन की ॥ नौं सरन लई चितनी
के दिनौं ॥ पा च ब्रह्म कं लि या संचारी ॥ अस ... तुम परजा
उंवारी ॥ फिरसूरजकूं नी कैधाया ॥ जग पालन तुम दिनकरि
राया ॥ और कही बिस्न जगत के स्वामी ॥ घट घट के तुम अं
तरजामी ॥ महा देव अरु मौरा माई ॥ शत्नी देव मम करो स
हाई ॥ जो मैं सुध बंस मैं उपजी ॥ डुं मैं सुद सुद ही सुत जी र
घुम म पिता मा तस तवंती ॥ उन की पुतरी मैं कुलवंती ॥ १२ दो
हा ॥ जो मेरी या देह मैं पापनहीं है मूर ॥ तौ जै से गंग नै रहा है कं स
मां र गहे होइ र ॥ १२ ब्रह्म बिधाता जगत पति यही अरज सुन
लेह ॥ मेरा बचन जु सांच है तौ सिता व सुष देह ॥ १४ बैसंपा
यन ॥ ... ॥ कंन्या की कहनां सुनी जगजी वनकरतार ॥ त
बैगनी ब्रह्म उदर स्नं आया कंठ मंझार ॥ १५ ॥ कंठ सं आया सी

॥१०॥ स्त्री कभुई तिहुं बार ॥ तबही निकसा बाहर ॥ नासा ही
के द्वार ॥१०॥ वो पड्यो आई बीक स नीडु षटा रे ॥ बालक जन
मौ नास द्वारे ॥ ता ते नास केत धरै नां के ॥ छो सघडी धन
धन बड़ ठां के ॥ भूम पर तही बालक बोला ॥ आपनां भेद शनी ति
न षोला ॥ हे माता सत वंती धर मी ॥ मन मैं धीर ज रष सुन क
रमी ॥ नाश के त मम ना वबषानौं ॥ जोगा सिद्ध मैं पूरन जानौं
वि धके बच एा जु पूरे नये ॥ उद्दालक सह आगे कहे ॥ ब सौ का
सुत है ॥ उद्दालक नाही का जो मैं ऊं बालक ॥ उपजा बाके
बीर ज सती ॥ कन्ति संच मानि यो जे ती ॥ बालक
बचन सुने जब मई ॥ व ह व ह ती अचर ज मैं
आई ॥१७॥ दोहरा ॥ जबै मोह वस होय के गोदी
लिया उठाय ॥ फिर मुष मै सुस्थन दियो षु सी भ
ई अधकाय ॥१८॥ चौपई ॥ बलिक सोभा कहा बषा
नें रूप वंत अरु धुर संताने ॥ रिषके आश्र
म ही के मांती ॥ पाल न लागी जिसी के ता
ई ॥ लजा दुष लियें रहे सु भागा ॥ दूक दि
न बालक रोवन लागा ॥ पंमा पं मैं न कौं

ताके से ... ग्रंथ सुभागी जैसें है १८ ॥ सो
वतकैं भारे ॥ ताही कारन बन मैं डारी ॥ वैश
पाय ने ॥ बा ॥ ग्र ॥ हूवा था जब एकबर स का स्त
पवं तगुन वंत सरसा को ॥ क्रोध सहित तमाता
मन आई ॥ ३ ॥ ही पिटारी एक बनाई ॥ तामैं बा
लक कूं पेठाया ॥ कुशा घास ता पै लि पटाया ॥ १९
दोहा ॥ गहि पिटारी आप कर गंगा दिया बहा
य ॥ तब कं न्या ३ स पुत्र कूं ॥ सै क ता सुनाय
२ ॥ चौपई ॥ कौं न गर्भ का मैं न ही जानूं ॥ तेरे पिता
कूं मैं न ही जा नूं ॥ जा के बार जनम्या ३ पाध ॥ ताही के
ढिग बैठ कर जानूं ॥ जव बालक वह बह ताचला
आगे सुन हो तब की कला ॥ बालक आया बह
ते बहते ॥ जहां रिषीस्वर बहुत करहते ॥ उहां लके
रहता था कोई ॥ तेज वंत तपसा अधिकाई ॥ लषी
पिटारी आवत सब ही ॥ परली ना ३ हां क तब ही

...राषी अपनें ठाइं। ... कर मैं मां
११ हो॥ बेद क में सब ही करिली नें। पितर कार जन्नी
सब की हैं। रहैता॥ रु न कर मों सनु टकर षो
ला फेर पिटार। जोटे है तो पुरषइ क सुंदर रूषि
कन्या पर कर रचो पई। गुण बंता अरु लक्षण धारी। ध्या
न जोग मैं ण बल कारी। उस बालक के मैं सालं
हि या॥ ज्ञान वान शिव ज ब षो कहि या। है बाल
क अब बसन् ह्योई। मेरे सुंदर रघा ममो ही। अैसें
कहि राषा धर्म साला॥ ला गाब ऊर कर न प्रतपाला।
इति श्रीमाना सकेत पार खा नें पिता पुत्र संजोगो नाम त
तियो ध्याय॥३॥ बैस पायन बाच॥ चौपई॥ एक
दिन ता बा की मह तारी। गया को ध जब बात बिचा
री। जिंह कारन बकु तै दुष पाया। सो बालक मैं गं
गा बहाया। सोच सोच मन मैं पछ ताई। गंगा कूल
ढूठनैं धाई। व्या कुल नई रोवती वाली। अपनी

बुधकूं देता । मोंचितलै ती वलती पुंहची तहां । उद्दा
लकरहूता था जहां । तहां अपना बालकही पाया । त
रिकै अंककों गले लगाया ॥ दोहा ॥ देषबकुंतपस नहूहो
कही द्वौस धनआज । ढूंढन कूं निकसी कुंती सो न
पूरन काज ॥ चौपई ॥ यौं कहि फिर बैठी वहबाला
बालक लिपन लगी जग साला । कंन्या कही लीपक
हाकरिहौ । कौकार जपा उपरसारहूा । नासकेता बा
व । जब बालक कही पिता हमारे । अज्ञा दे बन और
शिधारे । नातैं लीपन कुं जग साला । आप करे जग वैं
मधकाला । मा ना बाब ॥ कंन्या कही पुत्र तुमेरे । ला मैं
लीपूं बदलै तेरे । जब बालक लीपन नहीं कीन्हों । सक
लसैं जमा ता करि दीन्हौ । चितदे लीपा संदर बा
ला ॥ और रिनां सुंनां की साला । चरनदास कहैं फु
ल्ल नचढ़ी गंगा न्हांन करन कूं गई । उद्दाहा । तब उद्दा

लक आइ याव नतै आपनी गोद [illegible] क संग नथ
नकहा पुसी रु ए मत मांहि॥७३ दालकोवाच॥ पुत्र
रसाद जनी देतलीपन कियां बनाए॥ अग्नहोत्र का
मंडल नई जांति दर रसाए॥ बक्ता तपुसी लोपैं जया
संदर मेदर देष॥ ऐसा लीपा नां कजी जैसा आजब
शेष हुना॥ शक्रेतोवाच॥ पिता सुनैं लीपन कर
मभैं नही कीनां आजा॥ मेरी मातां आईं यां जिन
घर कीया काज॥७३ दालक उवाच चौपई॥ हे पुत्र
रतेरी जो माई॥ कारजैं कै कै कित कूं धाई॥ ना शके
तसुन ऐसें कही॥ गंगा ओर न्हान कूं गई॥ सुन पु
त्र बचन तपुसी रिष जषकें बक्रो रैं अग्नहोत्र चि
त दए अं करि करि कि मंज बोलन जया॥ पुत्र र
काकर कर मैं लया॥ फिर वासूं कही गंगाजा
वो॥ आपनी मांता कूं न्याओ॥ [illegible] रिकै प्रसन

कसैं। पुत्र षपन्न लले आगै धरूं ॥ बचन पिता के सुन कहो
गया। हाथ जोर माता सूं कह्या ॥ नारद उवाच ॥ हे मा
ता चल आश्रम मांही। जहां मम पिता बसो तुम काई। के
द सागनी कै करि पाबो। ऐसैं सुष स्नेह्यो सब बितावो
मों उवाच ॥ सुन चंद्रवती कहा बिचारा। कैसो सुत नव बच
न अजो गउ चारा॥ सुन करि रोंम उठै तन सारे। बिषण
धर्म का बचन कहारे। आगै नी किन्ही पुहुं जसली
या॥ माता दान पुत्र नै कीया॥ दोहा जग में ऐसी री
त हैं पिता करै जो दान। कै कंन्या कन्या तहा कै मां
मूं पर बांन १ नाश केत चुप का जया मन मांही सुक
चाय॥ उठ आया रिषपाश ही सब हिदिया सुना
य॥१०॥ चौपई॥ दे पुत्र रउन आबी जा षी॥ धर्म शास्त्र में
यों ही राषी॥ कहो उद्दालक फिर कां जाईये॥ मेरे
मुष सं ऐसें कहिये॥ कौंन बंश मैं जनम तुम्हारा। कै
सें उपजन न याद मारा। कौन काज कूं तुम यहां आइ
ए सब बात है पहो जाई॥ बचन पिता के सुन न बहाथा

१३ ग्रा ॥ जा माता के सीस नि वायाता ॥ सकैतोवाच ॥ फेर कै
ही रुन मेरी माता ता ॥ पूछन कूं पठ ग्रा मम ताता ॥ का की
धी को पिता तुम्हारो ॥ कैसें तुम रहे जन्म हमारो ॥ हो सो व
न कौ कारन को है ॥ सन्त सन्त कहु ज्यों कहि जो है ॥ मा
तोवाच दोहा ॥ चंद्रवती यों बोलिया सुनपुत्र परवीन
जो तू पूछत है सु मैं मैं कहु चित दे ची ॥ १९ पराराख के जो
ग ते कर्म न पाप सो जान ॥ सो मैं तोसुं कहत हूं सा षीद
कन गवान ॥ २० ॥ सूरज ही के बंस मैं रघु राजा प्रसिद्ध
मैं कुं बेटी ता सकी सुन करमी शब बीद ॥ २१ ॥ चौपई
चूने ली पे मंदर मांही ॥ रहती कुंती सोक कुछ नांही
दश हजार कन्या ढिग रहती ॥ नांति नांति मम सेवा
करती ॥ एक समै में गंगा गई ॥ जहां जाय कल्ला ती न
ई ॥ तिपरा कुशा कंवल ई कअ आया ॥ एक डा बोला
नाक ल गाया ॥ वा मैं बीरज मैं नहीं जाना ॥ नाक हो द
हूं उदर प्रमाना ॥ वा सें मो कूं गर्भ रहा या ॥ सषि
यों लख मम मात कहा या ॥ फिर राजा नी राजा सें कह्यो

पिता बनोंबाश मांहि दयो रोवनल गीबजनडुषपायो॥
वौंही एकत सीआयो॥१५ दोहा बेटी कही धीर जदि
या ले गया आ श्रामणांहि फनसुष संरहनैल गीसोचरहो
कुल्हनांहि॥१६ चौपई ईपुत्तर उपजा नृफांई। नाशकेमध
जम्यो आई। तातैनाशकेतधरोनांफ पलनेलगोबडुर
वेहठाऊ बरशदिनांकेहोसुषपागे छुटनौपैरोंचलनै
लागे। इकदिनसदनकियातुमन्हारा। मैं फ्मो धककिगंगा
डारा।१७ दोहा तनीरोश मांहि आईयालीनीनृतावना
या तामैं तोहिसुलाय कैरी नैगंगाबहाय॥१८ चौपई
चारबरशपीछेसुषआई। बडी नईजब मैं पलुताई।
जिहकारनबनलीयाबसेराशुषबुटकेडुषडुबाघ
नेरा। उपजैमोह क्रोधपावनागा। मनमैं नृषकपा
रा लागा कलप कलप जियरहानजाई। तबरही उठ
दुढ नृकुं धाई। ढुंढत ढुंढ तअबतोदिषपायाआ

ना०

१४ भसुषी कई हिया सिराया। सुनरे पुत्र रघुदू मम बाता
जापक है तुम अपने ताता। नाश ही के तु ३ लर जबआ
या। पिताकू सब ही नेद सुनाया। १२ वे संपाय सनैबा
चदोहा॥ सुन उदालिकि कुल समन बुल्लो बचन शेंनार
चले शंग ले बाले काजि त वंदू वतीतार र॥ २० ॥ गए जहां
बैठा बडु नागी। मन सुक ची उठ चरनौं लागी। चरनौं
सैं दोऊ नैंन लगाये। करी धनूद मदरस नपाये। देष
रिषी स्वर नैं सुष पाया। हंस करि ऐसे बचन सुनाया
चलिये रहि ऐसु नके पाऊं॥ मैं राजा रघु के ढिग जाऊं
ती नौं मिल आश्रम मैं आये। करि नोजन सब ही कु
लसाये। नासके तंवडाव तीबालता। दोनों राषच
ला धर्मसाला। नोरत्न पैंग्र रु बकृत संवारा। उदाल
कनैं गवन बिचारा। चरनदास कहै मन धरि आ
सा। जापुंहचा राजा रघु पासा। रहे हो हा। राजा ब
कु आदर किया सिंघासन नै [illegible] चरनौं सिर धर

थैं कही कृपा करी तुम आय॥ २२३ उद्दालक ऊवाच चौ
पई॥ उद्दालक कहै बचन अनूप॥ देषं पृथी परबत अनूप
तो सम राजा और न होई॥ जो तेरी बड़ी आरबल होई जो॥ र
घुवाच॥ द्वापद जोर कर पृथ्वी बाता॥ किंह कारन आये
तुम नाथा॥ मन मैं है सो आज्ञा दीजै॥ वही कांम नांरू मसू
ती जै॥ उद्दालकोवाच॥ १ राजा मोहि कछू न चाहिये॥ स
ती सा गजं गाल मैं रहिये॥ मैं आयो यह कह न्यामे री॥ कं
न्या मांगन आयो तेरी॥ बंस बढ़ाव नहीं के काजा॥ मोसे
सुनो सांच यह राजा॥ जा कूं दीजै मोहि परनाई॥ अपने म
न कि षाल सुनाई॥ रघुवाच॥ राजा कहि न बेटी मेरे॥ १
रे बचन न करूं जो तेरे॥ १ कछू ती सो षाई काला॥ मरगई
वृटीज जाला॥ ३ उद्दालकोवाच॥ उद्दालक कहै सुनो
हमारी॥ अबल गजी व तसु ता तुम्हारी॥ २ रघुवाच॥ रा
जा वैं क कही मु सकाई॥ वह कंन्या कि ते है रिषराई॥

मोहिदीघतअचरजसीबाता।।२१।।तुमषालकहोकुस
लाता।।२२।। उद्दालकोवाचदोहा।। रिषनैंकहीचद्राव
तीमेरआश्रममांहि।सुतसमेतकोंछोड़करिमेंआयो
इहां।।२३।। चौपई।। बचनसुनतपूरेनृप।। जोहमकूं
आगेउनकहे। कहाकियाहिलेबेटापेहे।। जिंहपीहैनारी
हाथैहै।।रिषनेंपिछलीकहिसमजाई।।आदितैअतलौं
सबेसुनाई।। वेसहेतबुरापेधायो।। विधनैंअसैंबचन
सुनायो।। पहिलेंपुत्रुरषाहैतिरयो।। तरेनागनमेंयोध
रियो।। योकहिअंतरध्यानविचारा।। मेंनिजअरुपलआ
नसंचारा।।फिररहकरितपहीआराधा।।मनमेंरहेबा
सनाआधा।। तातेबीजउराकरलीन्हो।। ताकूंपदम
मोहिधरदिना।। कुशालपेटीगंगबहायो।। तोकंन्यान्हा
तीकोंआयो।। वोकूंलेंघाकरमेंलायो।। बीजडोगर्भहे
होगयो।। तासदारजन्मजिनलीयो।। तासहीकेतना

२कंमी ग

वधरिदीया करिकरिकन्याकोधबहाया ऐसेपुत्तर
पहिलेंआया॥फिरवहहवाकूंढूंढनधाई ऐसेंमोत्रछ
त्तमेंआई॥बूढांबचनजुपूरे नरारेटरैं॥कोटउपा
वजुप्रांनीकरैं॥रिषमुनदेवतदैयतसारे॥समष
कोंनजुवांकूंटारे॥उद्दालकसबबोलसुनाई॥चन
जीतकहेंराजामनआई॥५॥वैशंपायनोवाच॥दो०
ऽतसउप्रांतजुभूपकूंअूचरजभयाहुलास॥फिरउ
ठकेमहलैंगयारानीहीकेपास॥रद्दचैपई॥खुसी
खुसीरानीसांबोला॥रिषकाकहासभीजोबो
ला॥रानीसांचमांनियेंमा३०॥बुरसोबचनजु
पूरेसोऊ॥सुनरानीकियेहुलसाई अरूआ
पसमेंबातसुनाई॥राजानिकसदारफिरआ
या॥उद्दालककूंनिकटबुलाया॥भक्तसहि
तहंसकरियोंबोला॥बचनप्रीतकेकहेअ
मोला॥सुंदररपअरूसेवगमेरे॥लेजाअप

भा०

नेसंगसहेरे चंद्रवती अरु बालक साथ। ऐसे कहीसि

तावी आवो। शिवसुनबचनसुसीजोनया। रणसेवगले

१६ अ स्यालगया। ॥२८ दोहा॥ रैन रहे वन स्यान परगाव नके

वारे चोर। दोनों रथ बैठाय करि चाला वाकी ओर। ॥२९

चौपई। चला चला राजा पै आया। राजा देष बहुत सुष

पाया। राजा रघु असुर सकिराना। होनौनैं मिलसु

तापिता नी रहे दोह।रो करि जब मांता मिली लीनी

उ लै गाय अरु नारी परवार की सनी मिली जो आ

३० चौपई। जब पंडितन कू लिया बुलाई। साहा काढल

गन धरवाई। किया बीवाह दोनब कुरी ना। कपडे

दिने सेजन वीना। दासी दासे दीने साथी। रथ घोडे करे

औरहाथी। सोने मठे सीगद गढ्या। धनरी जोत्रैंसे

दहपां। अरु बहु जाती दीने दाना। दानी नौ मब हुत सु

मां नां बिदा करत जोरे दोऊ हाथा। बिनती करी जु पि

ख्यी नाथा। नमस्कार रकी ... नमा। जब शिष्य दूस

करि... ... कौं... ... लकरसुन होराजा। ह
स्यो घोडे दूम कहा कोजा। गहनें कपडे हूम कहा
करहै। इतनो दान कहां ले धरिहैं सकल दहेज
दियो शिष फेरी १ कनराषो वेराचेरी। चरनदास
कहै कछु नली पो। उलटा सन्नी फेर जो दीपो। २१
दोहा। नासकेत चंद्रवती बैठा करि रथ मांहि। दो
नौ हिकुलैलेग पो अपने आश्रम ठाहि। उरचौपई
तव कां रूष संग रहू नैं नागे। स्वर सनेह मैं ती नों पा
गे। रनजीत कहै सहू कथपुरानी। जा की मिहमा
शिष नवषानी। मनुषदेव ना पंडित गावैं। धर्मनीसु
न करि जलसावें। जिन ति त औरसुरानन गाई। पा
प मिटा वन अरु सुषदाई। निरी धर्म की न वकु जानौ
सुंदर अधिक पवित्र तरमानौं। नकुनावकरि सुनैं जु
कोई। जौ जलपार उतरहै सोई। २३ इतिश्रीनासकेत
पारव्यानेचंद्रवतीविवाहो नाम चतुर्थोध्याय ४ वैशंपायन

वैसंपायन वैवा [torn] नृप। तप
वैसंपायन दोहा॥
१७ कर तैं रिषनैं दिया सुतकूं श्राप अब नृप॥१॥ कहा कि जाहु
मलोक कूं नारी की पातै पाप। नासकेत लिया मानके
उद्दालक का श्राप। र जन्मेजय उवाच॥ फिर जन्मेज
य पूछिया है बिप्र सुनले हे। सुतकूं दीया श्राप को
सो मन यूं दहसे देह॥३॥ सुतकूं देनां श्राप जो डर्ले नसीय
हबात। ऊपर अपनी आत्मा के सें सो है घात। चौपई
कैं न प्रयोजन दिया श्रापी। कैसें गयु जमपुरी आपकी
कैसे देष बदेष सब आया। मो सों सब ही कहो सुनाया
किसा नर्क है जिन दुष दावें। किसा स्वर्ग है जिहां सु
षपावें। वैसंपायन उवाच॥ बोला बैसंम सुनहो राजा। जैसे
दिया श्रापु जो नहीं काजा। जाकूं रिषिसें श्राया या जैसे। एक दिनां उद्दालक राया
चिंत देस नौं कष्ट अब तेसे। मैं रहूं घर तु बन कूं जावो
नासकेत कूं बचन सुनाया। अगन होत्र जा सूं सम
कंद फूल फल लकड़ी ल्यावो॥ पिता की आज्ञा ले
रहैं॥ सुन कर मौं के कारज सब है॥ जित तहां एक
करि धाये॥ चला चला बन मांही आये। आसप
सरोवर देषा॥ कंवल न नरे तामां हि बसे बास। गंध सुहाती॥ नांन
सहु महनजाता॥ फूले ले

पंखु। ... रदेषमनम ... काबि
धसूकरि ... नी। दृढव्रत पित्तर पूजन ठानि। पदोहा। न
द्रुबेल फल फूल सू जिनकू परसन कीन। रनजीता यों क
हे तहँ अंजली सूं जल दीन। फिर यों मन मैं आई यों बैठ्ध
सूं हरि ध्यान। आराधन प्रभु को करूं ऐसो रूप जो ध्यान।७
चौपाई। तहां बैठ करि आसन कीनौं। हरि के ध्यान मांहि मन
नदीनौं॥ जोगध्यान की जुगत विचारी। सूरत लीन भई ला
गी तारी। दो अरु तीन दिनां यों रही। वकरू आप सहज सु
ख लगई॥ जब ही घरकी चीता आई। पिता की आज्ञा चित
मैं आई॥ तातैं बेग चलाको आया। देष पिता कूं सीस नि
वाया॥ पिता देष पुत्तर की ओरी॥ बचन कियो धकहा बागे
री॥ अब मन हो त्रहे देवता परसन। बहुतां आद। पित्तर मुन ति
रपतन जवै सुषदाई धर्म लाद। बचन पिता के सुन लिये बो
लै ना सहा केत॥ समझावत है जो अबै पुत्र रही के दे त।१०
ना सके तो वाच॥ सुनौं पिता यह जानौं दाई॥ मान है त्रबंधन
जग मांही जनम मरन के नैकाद ता। सुष का ना सकरन एवा
ता जोग समान और कछु नांही। जगसमुद्र जासों तिर
जाई॥ ब्रह्मांड दर आदि कदेवा॥ जोगही करि कै यहु सि

ढलेवा ... कोऊ साको ... जाहाई
१८ ३ सूतोवाच ॥ देपुत्र रिष ... कै तपिस्या
करि हारे । तिनऊं ग्यान नहो त्वकूं धारा । ज्ञान पवित्र ... ये
मं जारा औरसे बेद मां हि लिषराषा । रनजीत कहैं उद्दालक
नाषा ॥ दोहा । ग्यान होतदीके बिनां ब्रह्म जगप नहिं होय
अति पुनात यह कर्म है करो चाव ह संसो य । १२ । नासके तो वाच
चौपई । नासकेत कहै बचन हमारे । सुनौ पिताजी कहूं बि
चारे । अग्रह त्वकरि सर्गसिधारे । फेर जनम पिरथी परि
धारे । कर मौं हीसे आवे जावे । बिनां जोग नहीं फेर ता
पावै ॥ पापपुन्य दोऊ बेडी पग मैं । इनकूं तोड चले हरि मग
मैं ॥ त्वक जोग अरु निर्मल ज्ञानैं । इन सूं मुक्त होय प्रसतजा
नैं । तीनौ मैं सर धा सोई करै । निह चै भवसागर सूं तरै ॥
बासल है चोथेपद मांहीं । जन्म मरन फेर होवै नांहीं । कर्म
करै अरु फलकूं चाहै । मुक्त न पावै दुष दुष साहै । १३ । बैसं
पायनौवाच । दोहा । बैशंपायन कहत है सुन जनमेजय भू
प । उदालक सुन बचन सूं चत प्रात मो गुन सू । १४ । चौ
पई । अर सुमुष सू कहा पापी दोषी ॥ तैं नैं षोटी कहि अनौं
षी । दैजु पिताकाइ उककारी । बेगही जाजमलोक

मंजारी। ... कुं ... भोगा गया। तू जमलोक जो गही न था।
फिर सत कर वहै नाम ही केन। वडे आपनू गिरा अेवेना। फि
र वैतन्न होय अंग मैं ना था। पिता माप सी सपर राषा। जा
कें जमलोक अबासूं। तुम रीअज्ञा क बकेनटा सूं। गिरा
पुत्तर कूं मुन जब देषा। शिव न या व्याकुल अधिक दब से षा। सो
कहा नें सत पून घा दै। बहु बिलाप दुबघ नां बुयादै॥१ पढेता
हाय पुत्र मम ग्राम मैं तो हिंदी नैं पाप मैं कोधी अज्ञान कुति
या ढाप मोहि पापा।१ इचौपई। हे पुत्तर धर्मराय जहां है मोर गादा
रू। गड ष्यत हां है और नर्क कहां है मैमां नां। वैसी ठौर न ताकूं ग्रा
नां। छोटा बालक डर कां जारी। दुषचुगात त है ... र और नारी।
मो कूं और अपनी मा ता कूं। हमैं छोड के कां मन जानूं। औ सेंब
च नें पिता जब बोले। नासही केत दीन ह्वै बोले। नास केतो
पाच १ हे पिता डिगापत मोकूं। नमस्कार बहुते करूं ता कूं था
न तुम्हारो हिरदै धरिऊं। बचन तुम्हारे कूं सत करिऊं। सत सैं
सूरज तपता मानैं। सत सूं पिरथी कूं थिर जानैं। सत सं अग्र जर
लत है सोई। सत संचंदा अस्थित होई। सत सूं लोक रहत ठह
रा१। सत सं धर्म सदा थिरधा१। सत सं ग्रह ब्रह्मांड षडा है। सत सं
सती संरक्षडा है। हे माहाराज सा ब... कूं एका१ हम सौं विधकि

पोतवके का। ... मेंध जगपस हंस ... राषजुदी
नें दूजे पलडे में सत राषा। च्यारी रहासाच तुह सा षा। ८ बहा
जगपलडा ऊंचे गयासत पलडा रहा न्यार। सत करि कैजो
रहि तन नर सोम सांम समाषा। ॥ ७ ॥ मोष सान तजदी जिये
वानर कूं पोतपाठा। सत पजत नकरि राषीये। सतही सेती
लागा। १। सुजी सत सूं पाइ येसतही सूं गति होय। सत धर्म से
ही नर जा हि नर कूं सो परणता तें सो करनि वारि ये षुधकूं षि
र करि लेकामें जा ऊं जम लोक कूं यही जुम्रज्ञा देइ। ठोर ठोर
हूं देष करि अग्रा ऊं चर नैं पास। बेगही म्रादर सन कस्लमन ही
मैं ... सोरइ ... पायनों ... च वैसें पायन कहत है देरजा
स ... ज्ञान ... नास के न कहै पिता कूं फिर ... नर ध्यानोर
चौपाइ तनी कहि फिर गवन विचारा। गया जोग वल्लगी
नवारा अे से जमके लोक पधारा ॥ धर्मराय का दरस निहारा॥
सिंघासनके ऊपर राजै। ... पुंज ज्यौ तेज बिराजै। जब दन
हाथ जोर दो ऊंली या॥ अे सो तर धर्मराय का कीया॥ न कूं ...
कर जु कुसं न्यारें॥ ति यें दीन ताल ... धर्म नी कपर बीन म
हाई॥ रन जीत कहें तिर लोक बडाई॥ इति श्री नासकत पुराणे
नें ... दरस ... पायु ने बाव दोहा

नकं... म

पैठ सन्ताके ।। बीच मैं डीठ बुध उद्दार ।। पंडित बक्ता तबि राजई बि
द्या का उजियार ।।१।। सार रहल्ल से सरूप सुन बालक कियो बना
य ।। अस्तोतर धर्मराय का सो सब कहूं सुनाय ।।२।। नासकेतो
वाच ।। नमस्कार धर्मराय कूं सर्व पितामह देव तीन लोक रि
ष्याकरन सकल हरिन निरलेव ।।३।। संरजक्त मरजाद धरि नी
त शास्त्र रूप धर्म अधर्म बिचार लिंकै न्याई अबिक अनूप ।।४।।
सब पितरौं के नाथ हो पूजैं सब सुर आदि ।। बुद्धिवान धर्मात्मा
सतवादी बिनबाद ।।५।। कांति बड्डी अरु निर्मला महा पवित्र
र देह ।। परजाओं के पति बडे नमस्कार ममलेह ।।६।। अधिकारी ध
र्म ध्यान के लछमीवान सुजान ।। नमस्कार मम लीजिये बक्ता रू
बक्ता गयान ।।७।। नमस्कार मम लीजिये पाप मिटावन हार ।।
बेल बढावन धर्म के अस्तुत बार म बार ।।८।। बैसंपायनोवा
च ।। बैसंपायन कहत है नराजा परहसिद्ध ।। अस्तोतर शि
रु त कियो पाप दहन परतित्त ।। यह अस्तोत्र सुनि खुसी होना
धर्म ही राय ।। है ब्राह्मण पर सन्न ज यो पूछत कहूं हरषाय ।।१०।।
कैसों कर आया यहां कहां सूं कै किन दिया पठाय ।। कै तूम आया
आप सूं हम कूं कहौ सुनाय ।।११।। दोहा ।। जब यो पूछा धर्म ही

राया रे बालक तहां कित आया बिना बुलाय नाकोई आवे अरे
२० अपनी देहि नहि लावे ॥ नासकेतोवाच ॥ दोहा ॥ नासकेत नम्र
मैं कही दीनों पिता श्राप ॥ अब तू जा जमलोक मैं आया या आप ॥ १२
चौपई ॥ पिता सराप श्राप ही आया ॥ तुम्हरे दरसन कर सुख पा
या ॥ जमोवाच ॥ धर्मराय सुन बचन उचारा ॥ धन धन बालक
अपन तुम्हारा ॥ अज्ञा मान पिता की आये ॥ हम तुम पै बहु
तै हरखाये ॥ हे बुधवान कहो का तो हि चहीये ॥ सुख सुं बिच
र जमपुरी मां ही ॥ बर मांगे सो ले अब ह्यां ही ॥ नसकेतो
वाच ॥ अहो देव तू परसन मो पै ॥ तो इक बर मांगूं मैं तो पै ॥ सुं
दर नगर तुम्हारा के सा ॥ मम भी दिखावो जित जित जे सा ॥ चि
त्रगुपत कुं मो हि मिलावो ॥ ह्यां का सब ही भेद जनावो ॥ १ ॥ दो
हा ॥ पततन कुं दुख होत है धर्मी सुख पनिवास ॥ ध्यों गौर दि
खाइ ये मैं च रनन को दास ॥ चौपई ॥ तिंह उपरांत धर्मदी राया ॥
किंकर अपनें कूं जो सुनाया ॥ या बालक कूं संग ले जावो ॥ चि
त्रगुपत ही कूं जु मिलावो ॥ यह ब्राह्मण है पंडी त न्यारा ॥ स
त धर्म का ज्ञान नवारा ॥ आप पिता के ह्यां चल आया ॥ या
कूं नगरी देऊ दिखाया ॥ चित्रगुपत तरकूं जा दीजो ॥ मेरी अज्ञा
सूं या की जो ॥ वैशंपायनोवाच ॥ ऐसें इतनन सूं कहि दीया ॥
नासके तकूं ... ॥ चित्रगुपत्र र के जा दा रे ॥ दार

कुंडी म

पालसूं बचन उचारे॥ इ तोवाच॥ धर्मराजनें इहमें षंदा या॥ नास
केतकूं संग पगाया॥१६॥ चित्रगुपत्तरपास ही जाय कही यह बो
ल॥ सुनकर गएसि ताव ही बात कही सब षोल॥१७॥ चित्र
गुपत्तर सुन महाराजी॥ धर्मराजने जे इस का जा॥ इक ब्राह्मण कूं
संग पठाया॥ इतन सधि थों लषे आया॥ चित्रगुपत्तरउवा
च॥ पूछो जाय सि ताबी बाकूं॥ केनी तरले आवो ताकूं॥ वै
शंपायनोवाच॥ दारपाल सब कूं ले गया॥ चित्रगुपत्तरका
दरसन त या॥ चित्रगुपत इतनसूं बूझा॥ तब ही इतबचन
कहे गूझा॥ इतोवाच॥ देवड नाग सुनौं करि दाया॥ धर्मराज
नैं इहमें पगाया॥ यह ब्राह्मण आया प्रबुध ज्ञानां॥ से साध अमें दि
ठमैं अतिस्यानां॥ पितास राय जम पुरी आया॥ ग्रा काचा वक
रे मन नाया॥ चित्रगुप्तोवाच दोहा॥ चित्रगुप्त जो बोली या सु
न ब्राह्मण महाराजा॥ तोइ ह्या पूरा करूं षोल कहो अब काज॥
P६। नासकेतोवाच॥ जानत हो सब नरन की गुप्त प्रगट जो वा
त॥ कछु नहीं तुम सूं छिपी हौ सकरो कैरा त॥२०॥ तेजवंत
प्राक्रम हौ बड़े तुम्हारे काज॥ देषा चाहूं जमपुरी॥ अरु सब

दो के साज॥ सा॥ चौपई॥ अरु इक मन की षोल सुनाऊ॥ दुष सुष
१२ दोनां कै देषावाऊं॥ चित्रगुप्तोवाच॥ धर्मराय को वचन इह मारे॥ दोहू
तो तुम द्वीर देषा रे॥ ठौर ठौर सब जाय दिषावो॥ संग ही रहो के
र ह्यौ लावो॥ इसैं नरक दुष पवन न लागै॥ रिष्या सं ले जा[illegible]सु
नागे॥ वै शंपायनोवाच॥ चित्रगुपत की आज्ञा पाई॥ सगारी ठा
री जाय दिषाई॥ नासकेत देष तहां जाई॥ ठौर ठौर देषी दि
तलाई॥ सात सुरग और नरक अगारा॥ चित्र चित्र कर देषा
सारा॥ सब दिषाय फिर ल्याये पासा॥ नमस्कार करी है
य अै त्रासा॥ २२॥ चित्रगुप्तोवाच दोहा॥ चित्रगुप्त कही
इत संपूरी नई तु त्रास॥ अब याकूं ले जाउ वै धर्मराय
कै पास॥ २३॥ सुन कै [illegible] तही ले गये॥ नमस्कार करी जा
य॥ धर्मराय वां देष कै बोले अध की नाय॥ २४॥ स्वा धा आ
सन ही दिया बैठाया कर चाव॥ चरन धोय पूजा करी आ
न कियां रिष नाव॥ २५॥ जनमेजयोवाच॥ चौपई॥ धर्मराय
इं सब वचन सुनाये॥ सती देष कहो सुष संआये॥ नास
केत जी गैर निहारी॥ तुम नै देष नगरी सारी॥ नासके
तोवाच॥ तुम फिर पासैं सुरग निहारे॥ अस इह म देषन

२कंडी प

रका अुदार॥ पापापु [illegible] सब कों देष॥ अरु उनके फल सनी
बिसेष॥ अबइ कअचरज और सुन लीजै॥ घर जाने की अज्ञा
दीजै॥ माता दुषी पिता दुष नारूं॥ जा यम लेइ ष सब ही टा
रूं॥ उन सं बचन किया धा आगूं॥ देष जमपुरी चरनौं लागूं
रहूं॥ दोहा॥ नमस्कार कर यों कही देषो सब ही नेव॥ अब
मात पिता पै जाय हूं मो कूं आयस देह॥ ९२॥ ज मोबाबाबो
पइ॥ धर्मराय कही आछी बाता॥ बचन कहो यह मोहि सुहाता॥ अ
बहू मतो कूं यहह बरदीनां॥ होगा अमर सदा परबीनां॥ अरु काया चू
ढी नहीं होगी॥ हमरे बर तैं रहै निरोगी॥ बैशंपायन बाच॥ नास
केत बर ले सिर नाया॥ मात पिता ढिग बेग ही आया॥ चला जो गाव
ललगी न बारा॥ एक पलक मैं जैसें तारा॥ रोवत मा ता कूं जहां पाया
पिता सोक मैं धा अधिकाया॥ पुत्र कूं जब आया देषा॥ उदालक नैं या
पु सी बसेषा॥ पिता औ रखंडा वती माई॥ हरष मां न बड करी बधा
ई॥ उदालक बाच। दोहा॥ जन्म कर्म पूजा सनी सुफल जन्म
म आज॥ पुत्तर का मुषदेष तैं सनी [illegible] ा एदुष नाज॥ २६॥ चौपई॥
उदालक कहो वा की मासूं॥ देषि [illegible] ता बीआ या कां सूं॥ जोग तप
स्या बल कूं देषो॥ अपने मन मैं करि करि लेषो॥ जमपुर गया दे

षअरुआया॥कांकानेदरसनीजोलाया॥ऐसीकहिनासकेतकेताका
 पूर्नबरननकरिसबबाका॥किसीजमपुरीदेषीकैसें॥कैसामारगा
आयेजैसें॥कैसादे[illegible]वरजमराया॥कहाषियाअरुक्यानुभवाया
जोजोदेषासोअबकहियें॥हमसेंसनीकहाजोचहियें॥नरकमांहि
दुषकैसेंकेसें॥सुरगमांहिसुषजैसेंहैसें॥३०दोहा॥अपनीआंषो
देषकरितुमआयेयागेर॥सुनसुनकेजानतकुतेसनीरिषीसरथैसो
रा॥३१॥नासकेतोबाचचौपई॥नासकेतजोरेदोऊहाथा॥कहै
नैलागेकांकीबाता॥तुमकृपाजमलोकसिधारा॥बहुदेवनको
दरसनिहारा॥चित्रगुपतहाँअरुधर्मराया॥उनकुंकामैंदरसनि
पाया॥सबलोकडंडदैनैवारा॥सोईकालमैंलियाबिचारा॥
जमकेदूतबटेबलवानो॥जिनकीसूरतजांतिजुनांनां॥धर्मरा
यकूंजामैंचीन्हों॥असनकरिकरिपरसनकीन्हों॥उनमांकूंबर
दियाअसोगाकहाकिअजरअमरतूहोगा॥अरुकहीजाहुपिता
केपासा॥जबमैंआयातुम्हरादासा॥३२॥इतिश्रीनासकेतूपा
ख्यानेपितापुत्रसंबादोनामषष्टमोध्यायः॥६॥वैशंपा
यनोबाचदोहा॥हेराजाताहीसमैंरिषआयेताठौर॥नासके
तकेदरसकूंकाज[illegible]नकोईऔर॥१॥[illegible]राजाकूंआधिदेअरु

आये बकनृप॥ रिषि राजा बकुं आदरै॥ अवरज सुनो अनूप॥२॥ अवरज
नष कहै नैं लगे आपुस ही के मांहि॥ गए जमपुरी आइ थाढी लल गाई
नांहि॥३॥ चौपई॥ पूर्बन उहां लक घर आये॥ ना सके त हां की सुधि ला
ये॥ इक इक रिष कुं योप हिचानैं॥ जलती अगन ते जगौं जानैं॥ इक ऐसे से
पष बारे मांही॥ र ज जीत कहै वे नोज न षांई॥ एक जु ऐसैं मास उपासी
जग जो गन सूर है उदासी॥ इक जल मांहि तपिस्या करई॥ इक पचअ
गनी तप कूं धरई॥ एक अधोमुष तप कूं साधै॥ इक सूरज ही कूं आराधैं।
एक सास कूं जान न देई॥ केंन कसा धर रहे है वेई॥ रहै एक जो पवन
अहारा॥ एकौ निराधार व्रत धारा॥४॥ दोहा॥ एक पांव बाजे षडे बाजे नि
र धबा कूं॥ बाजे मौन गहे रहैं ऊंचे फल की चाकू॥५॥ बाजे नगन सरी
र है बाजे करैं जु होम॥ बाजे साधे जोग ही लष कै उत्तम जौं माई॥ कौ
ई चंद्रायन ब्रत करि रहै है जु तप के मांहि॥ कोई इक सकै पान जो तर
वर ही के षांहि॥७॥ ऐसे ऐसे रिष सबै ना सके त ढिग आय॥ पूर्बन
की इच्छा सहि तदरसन ही के चाय॥८॥ चौपई॥ सब ही सुनि मिलबे कूं
धाये॥ ना सके न उठ सी सनि व्राये॥ मिल करि बैठे आश्रम मांही॥ ना
सके त सू पूर्बन तांई॥ जो जो अपनी आंषों देषा॥ सो सो हम सूं कहो
ब सेषा॥ जो तुम देष जमपुरी आये॥ समांचार जो हां के ल्याये।

षि॥ रिष उवाच दोहा॥ ऐसै रिषपूछत तब एनासकेत सूं बात॥ को
का सब बिस्तार ही कहियै हमारे साथ॥१०॥ को के मनुषन की कु
ल क्रोधवंत के संत॥ कटुक के मिठे बचन गयानवंत के जात॥११॥ कैसे
पापपुन्यकानेदा॥ कैसा जीवनकूं षेदा॥ कैसा नरक सुरग का बा
सा॥ कहा कहा कां जमकी त्रासा॥ कोका सबही करो बषानां॥ एक दि
नांदह मइ कूं जानां॥ सुषीदुषीन की चाल बतावो॥ धर्मकर्म हमकूं सम
झावो॥ कोकानेद कवन मतरापो॥ कहै कहांलौं सब तुम भाषो॥ जमते
रौं कूं कैसें आवे॥ पापी प्रानी क्यों करि ले जावैं॥ दुष सुष कहा बाट के मां
हीं॥ केते द्यौस नमै ले जांई॥ यौं कहि करि मुषताक नलागे॥ नासके
तजब नाषुन लागे॥१२॥ ना सकेतोवाचदोहा॥ नासकेतजब
यौं कही सुनौं रिषीस्वर साष॥ जो जो देषा जमपुरी सची कहैन दुरा
ष॥१३॥ चौपई॥ सुनौं रिषीस्वर चित अब दीजै॥ अब मैं कहूं स बै सु
नलीजै॥ महा भयानक दुष बहु भारे॥ सुन करि रोम उठैं तन सार
पित सराप गया मैं भांई॥ धरमराय पै लगि तन हांई॥ मैं अस्तुति की
रि परसन कीनों॥ आदर आसन उन मोहि दीनों॥ देवत बहुत साहु
कीदेषे॥ बलंत कार जमदूतन सेषे॥ चित्रगुपत मैं नैन निहारा
सब कूं सिष्यादेनें वारा॥ अरु मैं दीनदयावर पाया॥ कही अमर

होगा तो क्या या॥ पिता दया मैं फिर ल्यो आया॥ कहुं जुर्मो की सत्र बैसु
नाया॥ ५६ दोहा॥ सुंदर नगर सुहावनां जमपुर ता का नांव॥ संह
स जोजन विसतार है सत्र न्याव की ठांव॥ ५७॥ चौपई॥ महा नया
न के कोट निहारा॥ जोजन पांच नीत उचियारा॥ दखण दिसा ता
हि कूं जानों॥ तिसके द्वारे चार पिछानों॥ जैसे कर्म करे जो कोई॥
तैसे द्वारे बढि है सोई॥ पिरथम जमगण जग मैं धावैं॥ या प्रानी कूं
लैलैं आवैं॥ जैसे पाप करै नर लोई॥ जमसरूप तब न आवैं वोई॥ या
कूं मार पकड ले जावैं॥ जैसे कर्म किये तुग तावैं॥ ५८॥ दोहा॥ या
प्रानी जा जांति के लीने पाप लगाय॥ वा जांती जम आप है तैसे को
रूप बनाय॥ ५९॥ चौपई॥ कोई सूकर पर चढ आवैं॥ कांधे गदा
बडतडर पावैं॥ कोई चढे सिंघ की पीठ॥ कर मैं मुग्दर जबुरा ही
डीठ॥ कोई जम चढ आवैं तैसे॥ बुरी आष असकूंचे केसे॥
कोई आवै जरकस वारी॥ दांत बडे मुगदर लिये नारी॥ को
ई मुर्रंरदे के चढ काधे॥ षेंच कमांण तीर ही सांधे॥ कोई कुहेप
रि चढ धावैं॥ हाथी फांसी सी सघु मावैं॥ कोई आवैं गधा पला
णैं॥ काढे जीन बुरे ही बानैं॥ जग मैं बुरे कर्म जिनकी है॥ ति

नकूं यो आवत जमची है॥ बुरी बुरी संहर तहीं वन आवे॥ कहीं लगे कछु वहु त नहें ला वें॥ २०॥ दोहा॥ बुरे कर्म जिन कीकरें तिन की यह गति जान॥ जलेकर्म जोकरत है तिनकी सुख बखान॥ २१॥ जो जग में प्रमातमां चरनदास सुष पाय॥ तन छूटें गण पारषत सुष सो ही लेजा य॥ २१॥ चौपई॥ गण आवन को रूप बखानूं॥ जिन जिन जैसे जैसे जांनूं॥ कोई आवत ऋषि से देषा॥ धरि आवें तपसी को भेषा॥ कोई रूप बेशनो आवैं॥ गलि माला अरु तिलक बनावैं॥ कोई मात पिता के रूपा॥ कोई आवे गुरू स रूपा॥ कोई करत कीरतन धावें॥ हरि के गुण गावत ही आवैं॥ कोई आवैं माला फेरत॥ वाणी कूं हि त सें हेरत॥ कोई रथ विवान ले आवैं॥ हरि गुर का कोई नाम जपावें॥ कोई पालकी घोडे लावें॥ कोई हाथी ली ये आ वें॥ सुजन करमी कूं तहां चढावैं॥ सुष देते जमपुर ले जावें॥ २१॥ दोहा॥ मृत्युलोक सूं राह है जो जम पुरी की जान॥ छ्यासी सहँस जो जन स बेद तनै है परवान॥ २२॥ आठ औरदै कछू की वाही मा रग मांहीं॥ ऽ सुषही तुगता व तेज म गण लेले जां हि॥ २३॥ चौपई॥ जब प्रानी की छूटै देही॥ सब मिल आवैं कुटंब सनेही॥

बांधजूरकरिस्त्ररथीकरै॥चारमनुषकेकांधेधरै॥लेजावैंमरघ
टकेमांही॥मुदन्नुलसैंअसदेहजलांई॥तबकोनैंकनहीउदरा
वैं॥अपनैंअपनेंघरकूंजावैं॥जबहीजुदेहोंसपरवारी॥मातपि
तासुतधनअसनारी॥पाटपटंबरहीरामोती॥सबहीअलग
होंयकुलगोती॥बागमहलहाथीअरघोडे॥सबनैंपागदई
मुषमोडे॥राजकटकअोरमुलकचोमही॥दूरहोयसबतेज
जैंमही॥बीरनतीजेअोरयहदेही॥रनजीतकहेहैकोईनीहि
सनेही॥जूदेहाराधाडीलूटा॥ऐसैंचालासबसैंछूटा॥२४॥
दोहा॥जिनकारनबहुपापकरिलातादरबकमाय॥अपनांकरि
करिजांनतादेतातिहैंषुलाय॥२५॥रैनाकेहेहोवैंनहीतोडकहैंये
एबात॥जैसाकीयासोलुणोंहमतेरेनहीसाथ॥२६॥सबही
मितकहतैंलगेहमतेरेअबनाहि॥पापपुन्यजोकुछकियेसो
ईसंगहीजांहि॥२७॥चौपई॥जगतठाठजबअैसैंकहै॥त
बप्रानीदुषकदोरहैं॥जबहीमृतीधुननैंलागे॥कहैमाहिकों
ईनकेपागे॥हायहायमैंकुछनकीया॥रामभजनमैंमननहीं
दीया॥जिनकारनबहुपापकमाए॥सोमेरेअबकामअाए॥
साधसंगतकेमांहिनमिलिया॥दायापांअोकीराहनचलिया॥न

लोकर मसवही बिसराया॥ षोटे कर्म न सूं चित लाया॥ सोच सोच
५ सब ओर निहारे॥ कोई संगी कूं बारू मारे॥ यौं प्रानी पछुताता वाकरै
जम मार ले आगे धरै॥ चरनदास कहैं कछु न बसावै॥ ऐसें बांधा जम
पुर जावै॥२८॥ दोहा॥ पकड़ बांध जम ले चलैं गल मैं डार जंजीर
पापी जीव न दुष सहैं तदे तप नीहीं पीर॥२९॥ जो जीव हैं पुन्यातमा
सो वे सुष सूं जांहि॥ तिन कूं गण ले जात हैं जम नहीं छूवैं बांहि॥३०॥
चौपई॥ होइ जार जो अन मघ मांही॥ सहज रूप दुष सुष कोनां
ही॥ जम ले जावैं सो डर लागै॥ अति ही मानरूप हैं ताके॥ अ
रु इक पैंडा ली जै जाना॥ एक सहंस जोजन परवांनां॥ बहुत
कसिघ दिष्ट मैं आवैं॥ तिन कूं देष देष डर पावैं॥ जो साधो का
दरस न लावै॥ ताकूं नैकां कछू न व्यापै॥ आगे पांच सहंस सही
जोजन॥ तिन तन कांटे हैं उहिं पोजन॥ लोहे की सी कीलै पैनी
चुनचुन जो यमहा दुष देनी॥ वह पैंडा है अति दुषदाई॥ जांहि
कष्ट सूं लोग लुगाई॥ अरु धर्मी जा सुषसूं जावै॥ दिढ दौन
सब आगै आवैं॥ रथ चंडोल पालकी स्पानां॥ हाथी घोडे औ
र बिबानां॥ ऐसी बिधि के नाह न आवै॥ ऊंन ऊपर चढि बा
ट ले घावैं॥ चरनदास कहैं जो दांटेवै॥ ताका ब दलाओ

गैले रहैं॥३२॥ दोहा॥ जोजन दो पुह जारही पैंडा बालू रेत॥ दां नजि
न्हैं पनही करासो लंघहैं सुष सेत॥३३॥ आगे बारह सहंसही
जोजन षांडे धार॥ महा बिषम वह बाट है पाप पुन्य ही लार॥३२
घोडे के रथ बैल के रथ देवै जो कोय॥ वह पैंडा सुषसूं लंघै ताकुं
दुष नहीं होय॥३४॥ चौपई॥ वा के आगे जल ही आवै॥ सुकरहा
नरा थाह नहीं पावै॥ बहु और डरही डर लागै॥ आठ सहंस
जोजन वह जागै॥ भूमदांन जिन दीया होई॥ सुषसे जाय पार है सोई॥ ज
री॥ कुल दांन किया फल लावै॥ पगसूं धरती लगती जावै॥ ज
लसूं उतर चले जो आगै॥ राह अंधेरी डर बहु लागै॥ तास रस
हंस जोजन मग जानैं॥ तामैं कष्ट अधिक पहिचानैं॥ बि
जली चमक गरज बहु मानैं॥ परलै कीसी निस चित आनैं॥
दांन किये दीवे नहां आवैं॥ सो प्रानी चादन मैं जावैं॥ पंच नी
षम तुलसी के गाई॥ कै ठाकुर द्वारे के मांही॥ कै स नगुर के
नेंवन मंझारैं॥ बाट मांहि कै दीपक जारै॥ बाह्मण के घर
कै धर्मसाला॥ तारथ के परदीवा बाला॥३५॥ दोहा॥ प्रा
नाद सही दांन सं चादन नहीं जाहि॥३६॥ आगे स्यान कहुं
बटबाटा॥ उतरचढन के बहुत कघाय॥ बहुत कडर

जहां आगे आवैं॥ प्रानी अति ब्याकुल होजावैं॥ कहा कहूं बहु तै
दुषदाया॥ जाकूं देषैं कांपै काया॥ आठ सहंस जोजन मगसो
६ इ॥ तामैं धीरज रहै न कोई॥ आगे तपत जांन नकी जावै॥ सोतो
जोजन सहंस अठारै॥ तापैं ईमें नौसुष पावैं॥ कुवे वाकही ता
ल षुदावैं॥ कै पोदेवै मारग मांहीं॥ प्यासे जलकूं नाटै नांहीं॥
धर्मसाला भैरषे वनवाई॥ कै ब्राह्मण घर दे पधराई॥ ठा
कुरद्वारे कैमांहि जरावै॥ कै गुरद्वारे चरपधरावै॥ कैसुंदर
सेजवन बनाए॥ दिये दान जिन ताकोफलपाए॥ बाट मांहि जो
बहल गावै॥ औरसा दान कामकोआवै॥ आयु पिरा पनज
लकों होवैं॥ नपतप्यासपांनी कीषोवै॥ न्यासीसहंसजो
जन मग गाहिया॥ तिन तिन मैं तुम सैं कहिया॥३७॥ दोहा
जमपुरी के निकट है ताको कहूं बषांन॥ बैतरणी नदी ज
हासो जोजन परवांन॥३८॥ पीब रकत तामांहि भरिया॥
पानी परहर धीरन धरिया॥ बीछू कीडे सांप घनेंहीं॥ दुष
संकत नरैं पापस नेहीं॥ जो अपने स्वामी कूं मारै॥ औरबि
रासन कूहनडारै॥ प्यास लगै जबत्रै साकरै॥ रकत
पीब पीतिष्णां दहै॥ बैतरनी कोई सकै न देषा तामैं लहूउ

ठेग्र ने का॥ जाकि हूं ते जीव वै सा रे॥ तल ऊपर कन्नी लल
जौं किनारैं॥ ग्र रूकाम हि ह्याकरै न कोई॥ नाते हित नसंगी
होई॥ फिर त घुग्वि सवा सी घा ती॥ निज धर मन कूं हो दिन
सा षी॥ ८४॥ दोहा॥ बिना विचारें करते हैं बरत करें जो चंग
मिथ्या बाद करें घना रंगेलो जन कूं रंग॥ ८०॥ चौपई॥ सोवै
नही ही के मां ही॥ गिते देषप तन होई॥ प त ताेदी सै सा धरक
तही॥ पुन वारे कूं घी व सहू त की॥ जिस नें दिया ग्रन्न नही दा
ता॥ ग्रोर बसे ती रथ ग्रस्थाना॥ ग्रोर कहा तहैं गंगा सागर
ता॥ ग्रोर बसे ती रथ ग्रस्थाना॥ पोथी धर्म शास्त्र केरी॥ लि
छि ढबू त ग्रप नां रषे उ जागर॥ पोथी धर्मशा स्त्र केरी॥ लि
षा लिषा दें दान घनेरी॥ सा थी के वरि तो की ड स्या॥ सतगु
रसे ती लेवैं दिज्ञा॥ जिन गो दान करे सुन बारा॥ ताकी
पूंछ पकड हो पारा॥ घने मनुष मैं उ तर तदे ष बहु त सिता
बी सुनें बसे ष॥ ८१॥ दोहा॥ वा के ग्रागे गिर बडा धर्मसेल
जिंना व॥ ८२॥ सोने का निर्मल ड सा जौं बिलौर की दांव
ध८ प तत न कूं दी षे नही दाषे तौं ने रूप॥ देष त है प्यात मां
संदर महा ग्रनूप॥ इति श्री ना स के तू पास्य्याने में महामा

१०

एग सेस्यारोंनाम सप्तमोध्याय धरमराय दासा उवाच केदा

॥ फेरां ऋषि षी स्वर बोलि दयानासकेत महाराज॥ मारगकी
जो तुम करही नीकै समझी आज॥१॥ अब कहिये धर्मराय
की और सनाकी षोल॥ तुम्हदा तसुषदां नहीं मोहि तुम्ह
रे बोल॥ सबीकरें परवांमहीं हम तो चरनही दास॥ सुन
बेकौं मन चाव करि आबैठे तुम पास॥२॥ नासकेतोवाच
नासकेत कर जोर के ऋषि सौ बोले बैन॥ तुम चरनन की
रैन का हीमरी है सुषदैन॥७ चौपई॥ नासकेत कहीदा
तुम्हारे॥ तुमही आए नागह मारे॥ धरमराय की सबै
सुनाऊं॥ और सनाकी षोल दिषाऊं॥५दोहा॥ जमनगा
री रापा सहाजिस केद्वारे चार॥ छोटेनगार और बहुवा
ही के मंजार॥६॥ चौपई॥ रतन जडे जहां बहुते नाती॥ बा
नगरी की अनही कांती॥ बहुत अपसरा निरत करत है
बाजे बजत गीत उचरत है॥ तातें सुंदर होय रहा है॥ फू
ल बिछे बहु भूमी महा है॥ सभा माहि धर्मराय बिरा
रा॥ ज्यौं तारों मैं चंदा सारा॥ रिष जोगी तिंह पास बि
राजे॥ किंनर गंधरब अति बहु बिराजें॥ बिद्याधर ति

नहीके पासा॥ बकुंजी सिर पर हैं उमंग महुला सा॥ अत्र मैं त्रेभारद्वा
जा अगमरी चदधी चत्रुराजा॥ गौतम दुरवासा सामहा जोगी
च्यवन पुलस्त सुमित्र अत्र सोगी॥ गालव बिजातूकरन महा
मत धरम अरु धरम बिचार करैं नित और रिषी सब बहु
मतवादी॥ धरमराय ढिग जिनकी गादी॥ बारह सूरज
की सम रूपा॥ बसन रचि रैं रतन अनूपा॥ चतुर बेद के
पढनें बारो॥ और मीमांसा जानन हारो॥ बहुत सास्त्र अ
पबना॥ धरम का जजग मांहि चला॥ धरमराय उ
नके नीमां नी॥ सो भावे त अधिक छबि पाई॥ सिर पर सुंद
र मुकट धरे नी॥ बहुत भांत के रतन जडे नी॥ तेज कहूं जौं
बारह भांना॥ करै न्याव जौं दूध और पानी॥ प्रानी कूं जमग
न लैऐं जाई॥ बडा करैं जा कर बंदनाई॥ धरमराय कहै
कोल्ले जावो॥ चित्रगुप्त तहीं कूं दिषलावो॥ पाप पुन्य का ले
षा करै॥ प्रानी कि पास बुषसु षन रै॥ छिपकर और परगट
जो कीया॥ चित्रगुपत नैं सब कहि दीया॥ पाप पुन्य सब
कहि समझावैं॥ धर्मराय जब न्याव चुकावैं॥ कहै कि प
हिलै जुग तै पापार्क मांहि फल देकु संताप॥ आ दोरहि
नरक अगार रहै है जहां जिन किये जैसे पाप॥ वैसे मांहि

डालिहै नेसा तितेहैंसं तापाट ढो १५ ॥ अरुसजनमपुर चारहु
२८ वारे ॥ जाति जाति के न्यारे न्यारे ॥ पूरब दिसा एक है द्वारा ॥
दूजा पछमअोर निहारा ॥ तीजा उतर दिसा सुनाऊं ॥ चौथा
दछण अोर बताऊं ॥ कहुं पार पूरब की जानूं ॥ जाको मि
हमा सत्तीबषानूं ॥ जिनप्रानी अैसे करमकीने ॥ कपडे ल
कडी जाड़ेदीने ॥ पानी गरमी मांहि पिलाये ॥ रस्ता मै जि
न बिरछलगाये ॥ एके मनुष वाहन चढवाए ॥ भूषे कूं
भोजनकरवाए ॥ गुरके सेवनकी चितलीनी ॥ अरु सा
धनकी संगतकीनी ॥ उत्तमतीरथ किये संनारी ॥ दया धर
म हिरदे मैं धारी ॥ कृष्णकीरतन करत बसेषे ॥ पूरब द्वारे
बड़ते देषे ॥ सो एअबछराहरिगुनगावैं ॥ करत कीरत
नहीलेजावैं ॥ ९ ॥ दोहा ॥ पूरबद्वारे की कही सुनो रिषी
स्वरस्वैन ॥ पछमद्वारा अबकहूं सोबाहै सुषदैंन ॥ १० ॥ चौपई
जिन मात पिताकी अग्यामांनी ॥ पर निंद्या कबहूं न हि ठा
नी ॥ नितापरतकुलकी पादानां ॥ परधनकूं बिष्टासमजा
नां ॥ कामक्रोध जिनके नहीं मोहा ॥ काहूंसै राषें नहीद्रोहा
परतिरयामनमैं नहीलीनी ॥ नारायनकी पूजाकीनी ॥ वे
पछमद्वारे होजावें ॥ अपने लछन सुष पावैं ॥ द्वार तीस

रेकी सुनबाता॥ सत्नी सुनाऊं ताकी काथा॥ जो पुरानो है प
रउपगारा॥ परकारज हित दुष सहै नारी॥ अपने कारज
ढील लगावे॥ परकारज कूं उठउठ धावे॥ आपन दुष सहि
परसुषदीनां॥ जीवत परमारथ ही कीनां॥ आप धर्म करि
२ औरकरावै॥ हिंदे दया नाम चितलावै॥ सो जावे उतर
ही पारे॥ साधरूप गणा तिन के लारे॥ ॥ दोहा॥ विप्रन
क की नेष्टा साध विप्र की सेव॥ धर्म बरन में दिढ रहै सि
र पर रषि गुरदेव॥ ॥ २ चौपई॥ अरु नले कर्म जिन की नेना
ही॥ षोटे कर्मन के पड मांही॥ सो चौथे द्वारे हो जावे पबा
र मांहि जमबहु तस तावै॥ पाप किये जिन ऐसे ऐसे॥ स
बही षोलवताऊं तेसे॥ [illegible] ए बडे तन मन दुषदाई॥ सब
जीवन सं करै बुराई॥ चौपाए कूं बहु ते मारै॥ छिपकरि प
रिघ रिही कूं जारे॥ पंछी पकड फंद में डारे॥ जी बहुतन
की मन में धारै॥ हरि बिरछ कूं जो वे काटै॥ अरु चोरी क
रि लूटत बाटै॥ ठगऊ बहुत एकी कर घातै॥ मातपि
तासूं टेढी बातें॥ ३ दोहा॥ जार कर्म हित संकरैं गर
न गिरावैं जान॥ परनिंद्या बहु ती करैं महा मूढ अ

ज्ञांन॥२५॥चौपई॥अस वैहै विस्वासघाती॥बोलै झूठ
महाअपराधी॥झूठी साष नरै न लजावै॥ पर घर ही संध
२.६ न ठगला वै॥ जाका नूंण षांय वाका मारै॥ रसै मांहि विष गड
डारै॥ ऐसा होय पर की करहांसी॥ मन मै राषै सब संगां
सी॥ छिन कपट बहु ल नगल अहारा॥ जो कुछ कियासो
नांहि विचारा॥ साधसंग मै मन नहीं दीन्हां॥ गुरका कहा
पंथ नहीं चीन्हां॥ वे मुष होय पक्षा बनांसागे॥ ऽ निंद्या कैं उ
दूषधंधे पागै॥ बेद पुरानन कूं नहीं मानैं॥ शास्त्र की निंद्या
ही ठानै॥ पाप अनेक कर तन रीडरै॥ मन मै पाप पाप धु
न धरैं॥ औगुण चाहा गुण॥ नहिं पकडै॥ दीन लोय जा संब
ऊअ कडै॥ धर्म नृप अपनें स्वामी केरा॥ ताकिनि द्या करै घनेरा
परकी तृगली हित करि करैं॥ गुरको बचन न हिरदैं धरै
रिणदेवैं और ब्याज बढावैं॥ ताका धांन षुसी होषावैं॥ ब्याज
लैंन मैं न्यारी हान॥ निरफल जाय अकरै जो दान॥ हाय हाय
करजन्म गवावैं॥ सब कुछ रषि संतोष न आवैं॥ संकल
फासा जिन गल मांही॥ दषण द्वार रहै ते ते जाई॥५०दोहा
दषण द्वार सों आ रहै सबै नरक ऽ६ दाय॥ अतिकलेस जहा

हाय तहै पततन कूं षी आयु ॥६॥ सुनो र षोत्र बकान
दे जमहु तों का रूप ॥ का लसु र मेकी त रह अति ही षो
र सरूप ॥ जित पापी हाहा करैं हैं रहा अति सोर ॥ अंधका
र अै सा जहां सूझै निस नरक्षार ॥ १८ चौपई ॥ जहां [illegible]
कु ते अ सूका गा ॥ बिछू री छु अरु का ले नागा ॥ अ सका
टे लो हू समचाला ॥ ची त सिंह सिंघ विकाला ॥ जम के
दूत जहां बल कारी ॥ लोहे के मुगदर कर न्हारी ॥ जा सूप
ततन के सिर मारे ॥ त्राह त्राह कर अति पुकारे ॥ उस
छारे मैं नरक घनेरे ॥ सो मैं अपनी आंषों देरे ॥ सुनत तरें
मठा ढे हो जावें ॥ कंपै कलेजा अति थिरहरावें ॥ सुनो रि
षी मैं कहूं सुसारी ॥ दे षड राउ पजा निके कारी ॥ नरक कों
मांहि गिं जीव बकावन रिया ॥ मो दे षत बकुत क जहां गि
रिया ॥ सूरठा ॥ नरक कहू जारो है जहां हाय पुकार ही होय
जीव पुकार तहै पडे अगे सु निये सोय ॥ २१ ॥ तिन्हीं मैं
जो बडे नरक अठार हमुष ॥ ना बषा नूं जिनन के असु
कां के सब दुष ॥ २२ ॥ चौपई ॥ पहिले कुंची पाक सुनावें
जीवन कूं ता मांहि पकावें ॥ दूजा नरक अबी षो ला ॥

लहहि ॥२३॥ जीषांहि जु कोला ॥ रौरव महा नरक जो भारा ॥
जीव रोवैं बहु करैं पुकारा ॥ पौणा गुड जिमि नरक महा र
गुड रस ज्यौं औटर तहि कार ॥ कूप नरक कूंप सम जानैं
३० लोहु पीब भरा है मानैं ॥ महा कीट नरक बतलाऊं ॥ ता
मैं कीडे भरे बताऊं ॥ असिपत्र रवन नरक कूं कहीजे ॥ षां
डे की सम पात लहीजैं ॥ नरक सुदारुण है ये नीता ॥ ते
ज बडा तीक्षण बुहीता ॥२३॥ दोहा ॥ एक नरक निरस्वांस
है तहां घुटै जो स्वांस ॥ अ साडष क्रां होत है ज्यौं ठग मारी
फांस ॥२४॥ कुल सकुल जो नरक है ताही कूं सु निलेह ॥
पापी कूं संकल्लो समहित जकडै वाकी देह ॥२५॥ चौपई ॥
सूची मुष पापी जो पावैं ॥ सूई के मुष हो गिर जावैं ॥ महा
घोर नरक अति भारी ॥ ता मैं जैहैं अधिक अपारी ॥ सूल ही
रूप नरक कूं जानैं ॥ सूली की ज्यौं ताहि पिछानैं ॥ न
र्क अगनकुंड महातपत है ॥ ता कूं देषै हियाकंपत है ॥ नर्क
तेल जंत्र जो देषा ॥ कोल्हू की समता हि बसेषा ॥ ड षादड
छ की षान घना है ॥ नर्क वहीड षरूप बनां है ॥ अंधकार
जो नरक बताऊं ॥ महा अंधेरा तहां सुनाऊं ॥ नरक वि

लोचनबद्री कहां वैं ॥ जहां जाय युग्म धाहो जावै ॥ २६ ॥ दोहा ॥ अति गरमी जाड़ा घना चा नै कपग सुन लेह ॥ परवत सू देहा रिके सस्त रहै है देह ॥ २७ ॥ ओ स ओ से उ घ घ नै पतत न बार म बार ॥ छोटे कर्म वकै की बैठ बील लषे नर नार ॥ २८ ॥ इति श्री नास केतू पाख्याने नर्क बर्नने नाम अष्टमोध्याः रिषयां अषु: दोहा ॥ नर्क इक है तुमक है नासकेत महाराज ॥ जुदे जुदे बरनन करो ॥ हमैं सुना वो आज ॥ ॥ नासकेतोवाच ॥ चौपई ॥ नासकेत कहै सबै सुनाऊं ॥ एक एक कूं जुदा दिषाऊं ॥ सुनी रिषो जी ध्यान चित दीजे ॥ नर्कौ की गति सब सुन लीजे ॥ पहिलें कुंभी पाक कहूं तुम्हें ॥ ताडर सूं हरि ध्यान धरत हैं ॥ जा जा पापी जहां पर तहैं ॥ जम जिन कूं बड़ मांध रत है ॥ उन पापी जो पाप कमाये ॥ सो तुम सू अब कहूं सुनाये ॥ गऊ ब्राह्मण पशु बहु मारे ॥ पंछी आदि जीव हनडारे ॥ दान करत जाजोमारे ॥ और ब्रह्मचारी का तप टारे ॥ और गरीबन कूं हन डारे ॥ और मित्तर का घात बिचारे ॥ सो वै कुंभी नर्क मंझारी ॥ जाय परत है नर केनारी ॥

कुं जीपा क कंडुं परजानं ॥ जाका मुष दीर्घ ड समानं ॥ सो
३१ लह जो जन तें लखि सारा ॥ बहु दुष पावे गिरै हारा ॥ ब
डे बडे कीडे लग लग जाई ॥ महा दुरगं धबु रीतिह मांही
ता मैं बहु तब रस दुष पावै ॥ पाप जुगत कर बाहर आ
वैं ॥ दू जा नर्क अबीची आगैं ॥ वामैं गिरै पापु अस लागैं ॥ २ दोहा ॥ अधम संग जो रैं कुरक न्याउ डारै नारः ॥ जनम जनम गुर कहि नै ग ईं गिरा बैना रि ॥ ३ ॥ जाकोई
श्रीपादु नाअपने घके मांहि ॥ अन जल की पूबी न
हीं आदर दीया नां हि ॥ ४ ॥ चौपई ॥ नरक अबीची में दुष
नारी ॥ पापी जुगत नरक हा नारी ॥ बहु बरस निक
सन कूं लागे ॥ जैसा करै सुआवें आगें ॥ तीजा नरक म
हा नै कारी ॥ रौरव नांव जहां दुर नारी ॥ ता कूं देषक
पत हैं देही ॥ सुन कर मो बिन कोंन सनेही ॥ ५ दोहा जा
मैं तपती रेत है सूर ज सदा तपाय ॥ इक रस जलती हीर
है मैं कन कन निराय ॥ ६ ॥ चौपई ॥ रोवैं जीव अनेक प
डे हीं ॥ कबहुं बैठे कबहूं षडे हीं ॥ अति ब्याकुल तिन कूं ड
षनारा ॥ त्राहि त्राहि कर उठै पुकारा ॥ कर म कहुं जनके

अबकीये ॥ तापापन सैंवां में दीये ॥ पहलु नारि संजोग बि
चारे ॥ रूप देषे नव मन संडारें ॥ राज बिषै जिन नाव न
कीनां ॥ अपनी परजा कूं दुष दीनां ॥ बिन औगुन डांडे औ
र मारे ॥ करे कुन्याव बंध में डारें ॥ असु जिन ब्राह्मण बे
द पुरानां ॥ पढ पढ कैं कुबुद न जानां ॥ बेदन मैं केक
र्म नकी नें ॥ पाषंड करि करि हीद बिली नें ॥ आन देव अस
गिरह पुजाये ॥ हरि औरी कूं नांहि लगाये ॥ पेटका जन
म धार तडोलैं ॥ आपनें स्वारथ मिथ्या बोलैं ॥ दोहा ॥ ब्रा
ह्मण छत्री बैश्य जे असु संदर जग मांहि ॥ आप नें आपन
धर्म की राह संचार तनां हिं ॥ चौपई ॥ राह बेद की चलते
नांहि ॥ बे मरजाद रहै जग मांही ॥ संध्या यत बिती पातन
जानैं ॥ द्वादसी मावस नां पहिचानैं ॥ समैं पापैं डरो न न री
या ॥ रसनां हरि का नां मन लीया ॥ तिथ और परबा स मैं न
साधी ज्यौं का न्हां न तजा अपराधी ॥ संजम पूजा कबहु नजा
नी ॥ बे मुष चाल चला मन मांनी ॥ तरपन असु नित नेम
न कीनां ॥ गायत्री मैं मन न हि दीनां ॥ असु पूरा सतगुर
नहि कहिहूं ॥ रौरव नरक मां हि सो परिहै ॥ चौथा नरक

नासकत

सगुड जि मजा नैं ॥ ग्रोट तरह तकडाहा मानैं ॥ ६ ॥ दोहा

जा मैं पापी जीव ही परत ग्रायही ग्राय ॥ जिन पापौं तैं जि

२२ तहैं सो मैं कछु सुनाय ॥ १० ॥ [illegible] ॥ जो कछु केव सनचुरा

वैं ॥ विद्या पढ गुर कूं बिसरा वैं ॥ काहू कार जनों जो मारै

ग्ररु काहू का बुरा बिचारै ॥ सकर काहू की हद ला वैं

ग्रौर लोह गुड सूं न चुरावै ॥ गुड जिम नरक सु चु गते या

इ ॥ तामैं ग्रधिक महा दुख होई ॥ १ दोहा ॥ कूं पनरक है पा

च वां जा का करू बषान ॥ ता मैं लोह षी बहै कूं सूकी सम जान

२ चौपई ॥ तापै काग बहुत धिर रहीया ॥ बडी चोंच लोह सम भ

या ॥ ता मैं पापी कूं गरिदारै ॥ तिर ग्रावै उह चौं च ही मारै ॥ बडे

पतित मूरष ग्रति मांनी ॥ जन्म पाय हरि जन हिन जांनी ॥ पूरा

सत गुर ढूंढन कीनां ॥ परमेसुर का नांव न लीनां ॥ साधन

की संगत नहीं कीनी ॥ कथा कीरतन सुरत न दीनी ॥ ग्रसदा

नी संग गम न करतहैं ॥ सो बी याही नरक परत हैं ॥ फिर देह या

बिमान नहि ग्राई ॥ मनषा देह हीरतन गवाई ॥ या सम पाप ग्रौ

र कहा होई ॥ कूंप नरक मैं डूबे सोई ॥ महा की टकूं गा जो दे

षा ॥ कूपे की जौंता हि बे सेषा ॥ ता मैं बिष्टा बहुत भरिया ॥

कुल बुलाट कीडों नैं करिया ॥ बडे बडे कीडे ताके मांही ॥

पापाके तन मैं चिपटाई ॥ नलीन सों जिन स्त्रिय करि बाई ॥ आप स्त्र के लैं दि धान काई ॥ आपकी आप सुगंध लगाई ॥ का ऊ का लिपा अन्न चुराई ॥ अरु मैं सेवकू पाप कमावै ॥ सो महा कीट नरक मैं जावै ॥ १२ दोहा ॥ नरक सो तवा जानियैं आ तसि पतूर ख न नाव ॥ ट र षतकी समहै बड़ा पात डु धारें स्यों म ॥ १४ चौपई ॥ जो तरवार पात वै पैनें ॥ पततन कूं नारी डुष देनें ॥ पापी कूं वा नी चेला वै ॥ घोड़ा करै नाही बैठावै ॥ पा त ऊडै षांडे सम लागे ॥ कटै मा स हाड़ ही ताकें ॥ त्राह त्राह ज हां होर ही नारी ॥ स्नान करि चितें नो दि अनारी ॥ सुनौं रिषी स्वर औ र नमा सा ॥ देषा धर्मराय के पासा ॥ का ऊ जमका कों पल बांधै न ॥ को ऊ का गव ढै ही जाहन ॥ को ऊ द्रिरन च ढा ही जावै ॥ कोऊ गीदड़ चढाइ रवै ॥ उनके मुष किंक रा ब वें है ॥ नां नां बिध नैं रूप ठ नैं हैं ॥ काला रंग कठोर बडे ही ॥ अ धकी ता मस नैं हि चढे ही ॥ नेत र लाल डराव न तीषे ॥ डुषदा ई वै पापी जी को ॥ तन मां ही डुरगंध जु आवैं ॥ तांबी का धात्र

तिडुरपावै॥ मोटीदेहऊंचेकेसा॥ बहुतौंकामुषकरहेऐसा
२३ ॥१५॥दोहा॥ बहुतौंकेमुषस्वांनसे बहुतौंकेमुषबाघा॥ बहुतनकेची
तेमुषबनें बहुतौकेजौंनाग॥ २६॥ आनान बहुतनबिलाव
सेबहुतनकेमुषबैल॥ घोडेसेमुषबहुतनहै स्वित षोटेतन
मेल॥ १७॥ घोरेसबरननकिये॥ अरुमुषनांनारूप॥ तन
मांहीजेरोंगटेदीषतहैविविरूप॥ १८॥ चौपई॥ काहूकेक
मैं त्रिरसूला॥ काहूकेकरजलतापूला॥ काहूहाथमैंतीर
कमरकी॥ केतौपैतरवारैंतिरछी॥ बहुतौंकेकरमुगद
रचाले॥ गदाकुहाडेहैंबिकराले॥ बहुतनकेकरमूसलला
ठी॥ बहुतौंकेकरिलोहसांटी॥ अरुगोफनहैंहाथौंतिन
के॥ औरऔरकरससतरजिनके॥ ससतरलियैंजुगिनती
नांही॥ ऐसेदूतलषेंउठहाई॥ धर्मरामकीअज्ञासाथा॥ छे
दतहैंपततनकेगाता॥ मारेंबांधेंदयानकेका॥ महाकले
सतहामैंदेषो॥ १९॥ नासकेतऐसैंकहीजैनोंदेषीबात
रघजीताषौंकहतहैंसचीरिषीकेसाथ॥ २०॥ चौपई॥
औरदूतघोरीमुषबिनका॥ पैनीदाढकानबडजिनका

मोटेहोठपडेजोकेसा॥ नैंना लाल लम्बान कैसा॥ ऐसे जमपततनकेतांई॥ डारैं असपनरवङ्गत्रामदि षावैं॥ जो
कोईकाटैहरिपलपीपल॥ औरचुरावैबाड़ीमेफल॥
काटैंवृक्षजीवड़षदेवैं॥ कूटी साघनरैंदर्व लेवैं॥ राषव
रतनंगकरिडारैं॥ गुरकाधनसीसनहिधारैं॥ ऐसेपाप
करैंबजमारे॥ नरकसातवैंजांहतारे॥२१॥ इतिश्रीनास
केतूपाख्यानेनर्कवर्ननोनामनवमोध्यायः॥९॥ नासकेतो
वाच॥ दोहा॥ नरकसुंदारुण॥ औरहैमहाकष्टकीषांन॥
जहांकामीनरनारहीजुगतेंबहुदुषमान॥१॥ चौपई॥ बहुते
षंमनारकीसूरत॥ बहुतेपुरषस्वपकीमूरत॥ जोकोईप
रितिरयागललावैं॥ जिनकूंजलतेषंनमिलावैं॥ कहैंक
अपनांकीयाजोगो॥ अबक्योंमनमैंमानतसोगो॥ वानाः
री कूंलेहपिछानां॥ जाकेसंगबहुतसुषमानां॥ बिरषा
मनबादेहगंवाई॥ तुमतेंषरकूकरअधिकाई॥ जोनारी
परपुरषबामांती॥ षोटाकर्मकियाबासाथी॥ जिनकेका
रनषंजतपाये॥ बहुतीलालकीएतरलाये॥ जमकहैं१

तौं जार तुम्हारे॥ इनकी स्वर त्लेक निहारे॥ जिनके संग भंग कां
मनसर तियां॥ तुम तैन लीनी गही औरकु तियां॥ आगे सैं संग
नहीं तुमकूं॥ कै तुम सुनां नहीं धाद मकूं॥ तुग तौं घाही नर
क मंझा॥ निकसन की आवैं नहीं बारी॥ कियाजु कर्म अ
जोग निरारा॥ परमेस्वर का आयसटारा॥ २ दोहा॥ बल
ते धन तौं बांध करि मार कहै जाओ है॥ जो कुछ कीया जगत
मैं जाका फल अब लोह॥ २॥ त्रासई सी जमलोक का सुनता
था अकनांहि॥ तन मन संला गारहा मैं घुन नहीं के मांहि॥ ७
परवी अरु दिन वरत कै कियाजु मैंथुन कर्म॥ तिसे जोग
बौरान या तूला सील अरु धर्म॥ ४ चौपई॥ निरस्वास नरक
विकरारा॥ जा मैं पतन करै धजारा॥ ऐसे पापन सौं जावै
जो वैगुर की वस्तु चुरावैं॥ ब्राह्मण तथा देवता होई॥ इन
का अंस चुरावै कोई॥ बूढे अरु बालक कालीया॥ मालचु
रायब हुत दुखदाया॥ कै बूढा के बीधवानारी॥ तिनका द
रव चुरावै अनारी॥ जाय पतै है नर्क मंझारा॥ स्वास स्वकै ज
हाइ धाअपारा॥ दसवां कुनसं कुल जो देषा॥ तामैं इ धाहै अ

षिक बसे षा॥ ब्राह्मन छत्री सूदर बैसा॥ नारी पाप कीया जिन
ऐसा॥ मांस षाय मध रा जिन पीया॥ सो वा नरक मांहि गहि दी
या॥ मारा जीव मास लै षाया॥ जा का पात गर्भ जतब ताया॥ सो
ल मं जाय लाय जो षावैं॥ सो बी पापी बड दुष पावैं॥ उसी ठौ
र मैं याहू विहारा॥ ज्यान कन्ध ध कीड षमां नारा॥ अग्र रू
प जल ते दुं मदे षि॥ दस जोजन लांबे जु ब से षे॥ जो जन पां
च घेर विस्तारा॥ एक १ कका न्यारा न्यारा॥ संकल सूको
बांधे पापी हाहा शब्द कहै संतापी॥ जम लोहे की लाठी मारैं
मुगदर सों सिर फोड हाडारैं॥ उनका विमदो चां मउ पारै॥
सी सा तावैं मुष मै डारैं॥ वै तौ जल ते अध कपुकारैं। जौं
जौं जम ता मस करि मारैं॥ दृदोहा॥ नरक अपार वा कहूं त
ऊं सूची मुष है नांव॥ ता हां अबि कदुष है तहै महा बुरी व
हु ठांव॥ चौपई॥ जहां जाय कै पापी पड़ही॥ जो कोई अै
से कर्म करहीं॥ जिन्हौ पराई नारी मारी॥ अरु सत
गुर की निंद्या हाठां नी॥ तीरथ की निंद्या मुष लावैं॥ सो
सूची मुष नरक हि जावैं॥ नरक जु महा घोर दुकनां ऊं॥ सो

विकराल नयान कठोरं॥ तामैं सूकर सिंघ अरु कागा॥
२५ रहै तैठया कालेनागा॥ जिसनै पाप किये बहु जारी॥ सो
जावै वा नरक मंझारी॥ कूरम क मा पे षोटे षोटे॥ ऐसे पा
प किये जिन मोटे॥ चौपई॥ जो कोइ बेटि वाट कूं मां
हा॥ एक एक कूं देष तजाई॥ वरि तिरपा की औरी जमैं
जिनकी काग निकासत आंषें॥ जो कोइ बन मैं आग लगा
वैं॥ जिन का मांस सिंघ ही षावैं॥ जो कोई पापी गां वही
जारैं॥ तिनकी देह नेढया फाडैं॥ पर घर कूं जो पाव क
लावैं॥ सूकर जिनके हाथ चबावैं॥ जानै बिषे देकरि न
र मारे॥ षावैं तोडना गही कारे॥ ऐसे वाही नरक मंझा
क रा॥ वे दुष पावैं अधिक अपारा॥ बरनदास दे है नासही के
ता॥ नाष तहै जो कुछ भां देषा॥ दोहा॥ सूलरूं णई
क नरक है सूली की जो जान॥ पाप किये जिन राज मैं
सोई जिर तहैं आन॥ चौपई॥ मिरगन कूं जिन तीर
चलाये॥ करा सिकार मार ले आये॥ ताहू कन र सूली प
रदीये॥ हे तदर बके नाच नकी पे॥ जो वा नर्क मां ठिले बासा

बहुती देषै अघ कृतिं रासा ॥ कर्म न के फल छूटै नां ही ॥
देषे अपनी आंषो कांई ॥ ९ दोहा ॥ और नरक हैं चौदश नां
व अग्न ही कुंड ॥ ता हि लषैं हि पराङ्ग... तपत महा परचंड ॥ १
९ चौपई ॥ पापी ज्ञानी कूं कांडा रैं ॥ ... नां हि तै जम बहु मा
रैं ॥ कहै पापी मैं बहु न पिया सा ॥ जल पा के फिर द्यौ हु तिरा
सा ॥ दूत कहैं सुन रे मत हानो ॥ तैं तौ द्रपा धर्म न हि चीनां ॥ जल म पा
य दहू बी नहीं कीनां ॥ काहु कूं जलदान न दीनां ॥ जे व्रत ग्रास न
दीया पापी ॥ नेवज की रोटी नहीं पापी ॥ ब्राह्मण एक बहुं ना
हि जिमाया ॥ गुस्ताई कूं नां हि षुवाया ॥ अगन मां हि आहुं त
न जानी ॥ नृष कूं दिया अन्न न पानी ॥ ध्रुग ध्रुग रे मूरष नर लो
ई ॥ अपनां कीया नुगत अब सोई ॥ बिन नुगतैं छुटकारा नां ही
क्यों न हि गिर ताया के मां ही ॥ अब तुम अग्न कुंड कूं झेलो ॥
कोई न संगी नुगत अकेलो ॥ ३ दोहा ॥ गहन सु सूर जचंद का
ता मैं किया न दान ॥ येट न राजो बैल सम करी न पुन पहिचां
न ॥ ४ ॥ इति श्री रास के तृषा रखा ने नर्क बरननो नाम द समो
ध्याय ॥ १० ॥ नासकेतो बाच ॥ चौपई ॥ नरक तेल जंत्र इक नां ऊं ॥

केल्हू सूरत ताहि सुनाऊं॥ ता मैं पतन जीर तहैं जाई॥ कूमि
किये पेलो गलु गाई॥ जो कोई चोरी निंद्या करैं॥ जैसें मरोडु
२६ ले तनहु रैं॥ वे तब सिर को भू सैं चलकैं॥ पर तिरया कूं जो नैंब
ल लकैं॥ सो तो तैं जेव के [illegible]री॥ पिल पिल पापी बहु दुख पाईं॥ दु
घद सो लवां वानु गतावं॥ घीव तेल जो मनुष चुरावैं॥ जरू
लुटावैं निगुरा करैं॥ झूठे औ गुन का ऊधरैं॥ वा कूं तेल कडाहे
ने लैं॥ अपनें नैंन न देषे जलैं॥ [illegible] धरा अचवैं आभिषपावैं
तिन कूं ताता तेल पिलावैं॥ नरक सत्र वां लेड पिछानां॥ अंध
कार जो कस्ट वषानां॥ ५ ॥ दोहा॥ जो राकस वे जीव हैं बडी आ
र बल देह॥ तन ऊंचा बल है घनां तहां पर रहै वेह॥ चौपई
सुनौं कहूं जो कुन्ह को देषा॥ सो तु मसूरा पुनहीं नेका॥ अ
स्थान काल का एक निहारा॥ जो मनुषों को करै सिंघारा॥
महान यानक रहै अस्थानां॥ बडे कष्ट सूं होको जानां॥ दे
षा हूं तएक को नारी॥ जा का तन मे मोटा बलकारी॥ दहनें क
र मैं दंड जु वाके॥ बावें मैं फांसी है जाकें॥ आषें रक्त तसू प
बिकरारा॥ असन्नें से परि है असवारा॥ असजो किंकर रहै
वां पासा॥ उन का जी तन का लही कासा॥ ६ ॥ दोहा॥ अस

नाव किरतांत है उसी काल का ज्ञान॥ अब जो वाके हूत दै
सो किरतांत बिखांन॥१८॥ चौपई॥ एक समै जो बड धर्मराजा
अपने दूतन सूं कहो काजा॥ आज्ञा ले जमदूत पधारे॥ दैंतरा
ज दै घातन नारे॥ दूतन सु संरत [illegible] ला॥ १॥ दैतराज वै मा
र न आए॥ अरु दैतों नैं बहुत ककूटे॥ नई लराई संसर दूटे
धर्मराज पै नाठे आए॥ कां के कीं तगस बहु सुनाए॥ कही
दैं तो नैं हम कूं मारा॥ नैं कन मानां हुकम तुम्हारा॥ धर्मराय
सुन बहुत रिसाया॥ कालरूप कूं निकट बुलाया॥१९॥ दोहा
कहा किया हो कब ली उनके संग [illegible] जाव॥ दोनों सहित
जु नृप कूं मारण कड लेआव॥२०॥ चौपई॥ जमकी आज्ञा ले
वह काला॥ जै जैराव कहत उठ चाला॥ वाके संग दूतघन
चाले॥ अति जैमान महा बिकराले॥ आपने आपने सस्तर
तो लैं॥ चलो चलो आप समै बोलें॥ काल बहा जिन का दै
ना एक॥ एततन कूं तारीड बदा एक॥ षाडा है दद्द नेंक
र मांही॥ चंद्र हांस तिह नाव कहांई॥ फांसी लिये जु
वां वै हाथा॥ अैसें संग याइ तले साथा॥ दूत काल के अस
वेदानें॥ जुद्द करन लागे घमसानें॥ मुगदर बजे लागी

मारैं॥ जदा जु फांसी सेल संचारैं॥ २२ दोहा॥ षड्ग त्रिसूल प
ट्टिश रु बड़े अस मुष्टी की मार॥ दो कुठार सेल लत है तन की
३१ ना हीं संचार॥ २३॥ [illegible] ऐसा जुद्ध करै नड़ रा वे॥ देष तरी श
षड्डे हो जावैं॥ अंत [illegible] दूतों बें मारे॥ है तों के नायक जो हारे॥
और काल नैं डंडै मारे॥ तट फें बहुत धर न पैड़ा रे॥ मुगद
र गदा मार [illegible] सला १॥ बांध फां सियों पकड़ चलाए॥
धर्मराय के आगे की न्है॥ तब रा जावे नी केन्हि न्है॥ फिर कहा
इन कूं ले क रि षावो॥ चित्रगुप त ही पैले जावो॥ आप स्ले कि
र मांई आए॥ चित्रगुपत ही कूं जाय दिये॥ चित्रगुपत नै कि
या बिचारा॥ बड पापी है ये सब नारी॥ २४॥ दोहा॥ दूतों नैं
जतनै सहित बांधा सा वही धांन॥ नागेन जावे छूटे के बल वं
ते परवांन॥ २५॥ चौपई॥ फिर वे नरक मांहि डलवाए॥ उन
कूं बहुत त्रास दिषाए॥ जो सो काढै बहुती बारा॥ फेर दे
अगन कुंड मैं डारा॥ ऐसैं दैत न कूं नी देषा॥ पाप पुन्य का देवै
लेषा॥ ताते सुनो रिषी परवीनो॥ रहै न ही धनवंता हीनो॥ नां
रहै बलीन बूढा बारा॥ काल सबी का षाने हारा॥ कै घर मैं कै
बन के मांही॥ काल कहीं छोड़त है नांहीं॥ काल बली की

फिरै दुहाई॥ को नह्नो डारंक त्रौ सराई॥ नां कोई संगी नां को
ई साथी॥ बहु तो गह्यि गह्नि छोडी बाथी॥ २५ दोहा॥ ता तैं या
संसार मैं चित बालानो कौ प॥ यह दव सम को जानि लोत्र
पनां कोई नहीं॥ २६ चौपई॥ मूर्षे पा... रोवैं॥ सुपना सा
देषे जब सोवै॥ जब जागे जब कोई न कोई। ऐसी नांनी जगत
यह होई॥ छोटी वडी और बल मानौं॥ यह सब का लघ तर
जानौं॥ व्याध रोग मैं यह को परै॥ काल षेल ए सबही करै॥
सबही सिष्ट कालमुष मांही॥ कोट जतन सूं बचै सु नांही॥
इसी जगत का ऐसा लेषा॥ जों स्वागी धर नाचै नेषा॥ जैसे बा
टबटेऊ जावै॥ व्याहि वृक्ष की टुक छह रावे। फिर वह धूप मांहि
हीं धावै॥ जब लग नाहि ठिकानां पावै॥ २७। दोहा॥ थोडा सुष सं
सार का ता मैं दुष अपार। चित मन दीजे तास मैं मैं कहुं बार म
बार॥ २८॥ चौपई॥ साध संगत गुरु चरन मनावो॥ ता तैं का
ल चपेट न षावो॥ हरि की औरी चित लगावो॥ या तै मुक्ति ठिका
ना पावो॥ २९॥ दोहा॥ नरक बिलोचन अब कहुं सो अठार
वां ज्ञान॥ वे पापी कांप रत हैं जिन की दिष्ट कुध्यान॥ ३० चौ
पई॥ राह चलत नहिं जीव निहारे॥ बाजे देषे तो बी मारे॥

परत्तरपा[illegible]देषतजावै॥ करैमनोरथबह्नतलुभावै॥ क्रोध दि
२८ टसाधनकूं देषै॥ [illegible]नकी निंद्याकरैबसेषै॥ देवर्कसीका
पडदाषोलै॥ [illegible]मारेही मैंडोलैं॥ साधगुरूकी औरन
भाके॥ ठाकुरद्वारे [illegible]तनराषै॥ बिधवानारी कालजल आ
जै॥ आन पुरषही केन्ना काजैं॥ असेजोहैं लोगलुगाई॥
तिन्है नरकपड़ [illegible] तिदुबदाई॥ गिरतेबिनआंषिनसोजा
वेपचीसें बहुतमहादुषपावै॥ रणजीतकहैं उननैननिहा
रा॥ कहारिषनसंलषबिस्तारा॥ औरअनूगनर्कवना
कं॥ सोपिरथीऊपरदिषलाऊं॥ २१॥ दोहा॥ सो पाही मृत्यु
लोकमैदेषाअपनेनैन॥ एहपरगटपरतीतहै पापीकंदुष
दैन॥ २२॥ चौपई॥ जगमै नरकबहु अबषोलैं॥ महाकंगा
लमांगतेडोलैं॥ नागेभूषे औरजडापे॥ भूताजोजिनके
दीपापे॥ पेटभरनकूं जतनकरतहैं॥ बहुतपचें नांउदरभ
रतहैं॥ हैदालिद्री नितही रोगी॥ अधरे कोढीनिसदि
नसोगी॥ असेदेषोजोनरनारी॥ सबकूं जानोंनरकमं
भारी॥ जोकोई पडेबंधकेमांहीं॥ जीवतनरकमांहिभू
गताहीं॥ चोरेकर[illegible]तेनाकहु रावें॥ जिनकूंपापादेजभ

लेजावें॥ औगुनगारेकूंबहुमारें॥ पाछैजकडबंधमेंडारें॥
उदोहा॥ निरषपर निहचैकरोमनमेंलीजैजान॥ अपनी
आषोंदेषलो मेंजोकिपावषांन॥ ३ ... ह्मासकेतो
पाख्यानेजमशासनोनाम ... षष्ठा
केचतुःचौपई॥ कहैरिषीस्वरसुनहोदाता॥ नासकेतनुम
परमगिपाता॥ जगमेबसनादीषैअैसा॥ रैनसमैंसुपन
की जैसा॥ राहमांही जोंघकाबऊं॥ बैठ्याहिफिरचलेउ
ठाऊं॥ आवागवनपोजगतमेंऊरा॥ हमकूंडरलागतहै
न्नारा॥ तूंजमलोकदेषकरिआया॥ हमकेअैसाज्ञानदिढा
या॥ अबइकबातबूझतहैओरी॥ सन्नीरिषीस्वरदोऊंक
रजोरी॥ याकाऊतरहमकूंदीजै॥ हमैंसनायाआजतुमकी
जै॥ सबैपापकाफलदिषलाया॥ सोसबहमरेनिहचैं
आया॥ दोहा॥ पुन्नकरनकेफलनको अबतुमकहोविचा
र॥ ओजोदेषानैनहीसुषपावैतनरनार॥ चौपई॥ जोपैलो
गदानपुनकरै॥ फलपावैकहाजबयेंमरै॥ कृपाकरिकरि
सबहीकहियै॥ हमकूंनीकाकीयाचहियै॥ नासकेतो
वाचो॥ नासकेतजबबचनऊचारा॥ सोसोकऊंजुनेनभि

दोरा॥जगमैं सीलदयाही मुषीया॥पुन्नदांन संतोषै सुषिया॥
४६ जोनरइनसे नीचितलावैं॥बाटमां हि नअंतै सुषपावैं॥कोम
[illegible] राह विरछ न [illegible]॥मडासुगंध नाहि उनतले॥फलषानें
कूं मारग मांही॥ [illegible] नन ऊपरजोई॥मनषादेह पायपुजि
नकीन्हां॥जीव नदांन कछू नादीन्हा॥आपा मिलतहैं मारग
मांही॥सब आनंद संतोषा ते जोई॥जिनजावैं ओ सेपुन कीन्हे॥दू
घरही घ् नदिये न दीनें॥दूदोहा॥नांनां जोति मिठाई यां अरु मेवा
दई जोंन॥नांनाविध भोजन दिये सोई मिलत तहैं आन॥जो
कुन्नु करै सु आपकूं परकूं करैन कोय॥आपनां कीया पाय हैं नी
चऊंच यौ नहोय॥ [illegible] पई॥आगै बाजे वजते जावैं॥हरिजस
अधिक नायका गावैं॥असै जावैं स्वर्ग मंझारे॥लैंन अबछरा
आवैं द्वारे॥निरतकर तनी तरलेजावैं॥सिंघासन ऊपर बै
ठावैं॥धर्मनीकाकूं देषैं कोई॥उठठ आनमिलतहैं सोई॥
बहुतक जहां अबछरानारी॥दिव्यबस्तर दिव्य भूषन बारी
चोवाचंदन कोई लगावैं॥कोई चाव सों पवन हुरावैं॥कहैं
कहमतोंतुम्हरीदासी॥हमतुम मरहैं सदाही पासी॥एकसा
ए मिलहरि गुन गावैं॥करै विलास परमसुषपावैं॥दूदोहा

के लक रैं स्वरगलोक मैं जिन किये अैसे दांन॥ जुदो जुदो वर
नदास अब ताको कहैं बषान॥७ चौपई॥ जिन तलाव औ और
कूये षुदाए॥ बाट मांहि जिन ड्रुम ल[illegible]॥ अरु जिन अैसे
दान बहु कीने॥ बहुत दांन बिप्रन को दीने॥ सोंना रूपा
मूंगे मोती॥ पन्ना हीरा अरु जलजोती॥ मा[illegible] कु चुनी और रन
गीनां॥ दांन अनाज रू वस्त्र का जिन दीनां॥ गऊ नें तांडे [illegible]
नें॥ मंदर रत्नमदांन जिनकीनां॥ तांबा और रकपूर सुहाए
अन्नदांन जो जन जिन षुवाए॥ अैसी बसतें दैजे वारे॥ जा पुन
सत है स्वर्ग में ऊरे॥ वह लै धर्मराप पै जावैं॥ गए सुषसों ले
ले ही धावैं॥८ दोहा॥ षड़ा करैं धर्मराप ढिग करि करि ब
दुती बावै॥ जब राजा अैसें कहै स्वर्गलोक ले जाव॥ ९॥८
इति श्रीनासकेतूपाख्याने स्वर्गमारग वर्ननो नाम द्वादशो
ध्यायः॥ नासकेतो बाच दोहा॥ अब स्वरगों का कहूं तंऊ
जुदा जुदा ही नांव॥ सुनकर मन सुं पाउ पैअैसी उत्तम गांव
१ वह ला स्वर्ग सुहावनां है कुबेर का लोक॥ जच्छ गंध्रप जहां
अपसरा जोगी महा असोक॥ २॥ लोक बरुन का बहु बिध ना
रतन जड़े अस्थान॥ बाग घनें सो ताघनी बड़े सषोंकी षांन

३॥ इंदर की अमरावती रहा सुर गंध्रब धारि॥ न तकर त
४० है अस राक्षष की जहां बहार॥ ४॥ रोग बूढा पावै न को जो
कोई पृहूचै जा[illegible] तन जडे मंदर मिलै लोग गै लोग अघ
पा॥ ५॥ सो [illegible] लो[illegible] सुष घना पावैं अति ही चैं ना॥ रन
जीत कै देषा जाप [illegible] र देषैं अपने नैन॥ ६॥ आदित लोक
मैं लोग है नांनां बिध सुषदांन॥ दिवदेही पावै जहां रि
षि की रूप निदांन॥ ७॥ शिव का लोक सुहावना सो ना क
ही न जाय॥ जो जैसी इछा करै तै सा ही फल पाय॥ ८॥ सत्य
मुनिन की ललित है तीरथ मूरत धारि॥ सब परबत है ही
धरै घनी अबहु राना शि॥ ९॥ ब्रह्म लोक सब सूं बडा तेज
वंत अधिकाय॥ अति उज्जल निर्मल महा दिष्ट नहीं ठहराय
१०॥ दम कैं मंदर रतन के नांनां बिध के लोग॥ वहां बसै फो
जाय करि जो साधै तप जोग॥ ११॥ सात स्वर्ग बरनन करे
सत्तम कहे बनाय॥ जिसकूं रनीसं जाफका सो अब कहूं
सुनाय॥ १२॥ चौपई॥ सुनैं रिषीस्वर सबै सुनाऊं॥ ध
र मिहीं के लोग बताऊं॥ धरमी पुरष बसत तहां जोई॥ नां
नां सुष आनंद तहां होई॥ [illegible] परहा [illegible] और एक बानो॥ स

रत जहां मे वाहें नां नां। दिव गर्हनें जहार रतन जड़ाऊं॥ रेस म
व स्तर अधिक सुहाऊं॥ जहां अप्सरा सेवकर तहूं॥ अज्ञा मां
ह्नी षड़ी रहत है॥ अ[illegible] त बाजे बहुत [illegible] तहैं॥ महा बिने
टी तहार जत हैं॥ जो कोई कूं वा ता [illegible] नावे॥ औरन बावड़ी
बाग बनावैं॥ सुरग मां हिवे आनंद पावैं॥ बहुत काल
मनुष्य लोकन आवैं॥ ३॥ दोहा॥ जौ मग कूं औ रहे मकान औ
र बसन दैं दान॥ सो वैष्ण प्रताव तें रहे स्वर्ग सुष मान॥ १
४ चौपई॥ आनंद कर ते देषनारा॥ कहुं जु अपनें नैंन निहा
रा॥ जिन नर गुरु की सेवा करि पा॥ हरि की पूजा मन मैं ध
रि पा॥ मात पिता का सेवन कीन्हां॥ ब्राह्मण कुं बहु दान
दीन्हां॥ कंद मूल फल अंन जु रीपा॥ विप्र साधका आदर
की पा॥ हरष मांन भोजन जो षवा पा॥ चलती बारा सीस
निवा पा॥ तब पहृदान बिंधहो फले॥ सोई आप प्रानी
कूं मिलै॥ सुष पावैं तुष्टै आनंदा॥ जो कोई बोवैं धर्म की कं
दा॥ जो कोई पुत्र दांन न्हा देवैं॥ कुबेर लोक जा का फल
लेवैं॥ ५॥ दोहा॥ कि पो अग न होत्र र सदा कि पो जज्ञ
अरु दान॥ का म [illegible] सा ना कि पो जती रहे वेजा ना ६

चौपई॥ सब जीवनकौं रषा बिचारैं॥ काऊ कुं षर षैं न हि मारैं॥ तनमन बचन रहैं सुषदाई॥ देवैं अंन दांन हररषा

५१ ई॥ बेदपुरान [illegible] सुष पावैं॥ कथा कीरतन सौं मन लावैं॥ बे[illegible] सा[illegible] पिस्या करैं॥ साधे जोग पाप सब हरैं॥ गुरू साधके [illegible] सनधावैं॥ अरु सर धा सुं तीरथ न्हावैं॥ सो बरुन लोक के मांही॥ प्रांनी जा बहु तै सुष पाई॥ जो कोई चतुर पुरष कहलावैं॥ कृतज तन करि दरब कमावैं॥ चहि पै बहु नि नदांन ही देवैं॥ सो जस को बहु तै सुष लेवैं॥ १७ दोहा॥ पनही नांगे देत है प्यासे को गल देत॥ चरनदास पौंका हू तहैं फल पावन केहेत॥

१८ चौपई॥ नाडे बसतर घोडे हाथी॥ गऊ ना देवैं बहु साथी॥ देवैं ऊंट पलाणैं साजैं॥ सो जीइंदर लोक बिराजैं॥ बहुत जोग करे वां गंई॥ रथ बिवान चढर मैं तहांई॥ मोर लगे काहू रथ साथा॥ हंस लगे काहू बिषाता॥ कैर पौं के हाथी अरु घोडे॥ कहू पौं के सारस के जोडे॥ आप नें धर्मदांन के कीये॥ देवत हो पसवरगा सुष लीये॥ देव सु नाव [illegible] से वा करैं॥ धनि नीक कं हित बहु धरैं॥

जिनका रूप जांनि यैं ऐसा ॥ गगन तपासो नाहैं जैसा ॥ सु
द्ध फटकज्यौं निर्मल देहा ॥ रतन जटित तिनके गेहा ॥
कंठमांहि रतनौंकी माला ॥ महा स... वे बाला ॥ १
९ ॥ दोहा ॥ बाजे सु घटु बजावई ... रतें ... नुराय ॥
धर्मनीको के कारनैं अस्थापीध में राय ॥ २० ॥ कांजोहैं व
मी त्यों वहैं बिवांनों देष ॥ जहां इ ... तहां जात हैं क्रीडा
करैं अनेक ॥ २१ ॥ अन्न दांन के किये तेपावें अमृतजोग
ता तैं सब ही नरन कूं तांन ही दैनां जोग ॥ २२ ॥ चौपई ॥ जो
नारी ऐसा प्रणधारैं ॥ पतिब्रता हो धर्म संभारैं ॥ पहि
ल सब कुटंब कूं षूवावें ॥ पीछे बचा अन्न पकूं पावें ॥ अस्थ
पनैं पति कूं नित सेवें ॥ सो बरइंद्र लोक फल लेवें ॥
देही दिव्य रूप धर रहिपा ॥ सुंदर एक बिवांन मुल
हिपा ॥ रतन जड़े घर मांहि बिराजें ॥ आगें सिद्ध पड़ी
छबि छाजें ॥ सील बरत में सांची नारी ॥ पतिकी आज्ञा
कबकूं न टारी ॥ तिरदेवा सें अपनें पतिकूं ॥ अबि
क जानता हैं बरहि तसें ॥ पर पति के पाहह जाइन
नी रा ॥ सबकूं जानें बाप अरु बीरा ॥ आन पुरष के

न०

६२ कुवेन मोता॥अपनें पति की पद रै पोता॥तिरलोकी जा
कूं सिर नावैं॥जहां तहां बहु अस्तुत पावैं॥स्वर्गी मांहि
रूप लै नै वा... न लछन सब बात संवारी॥पति
के संग ...गी ही ...॥काहू सें पाप की नहिं करै॥दुष
रूप ता मैं सेग... छाड़ै॥अपनें पति ही सूं हित मांडै
बुरा न ला पति कूं नहि जांनैं॥हरि ही की सम ता हि पी
छा नैं॥बुरी भली आज्ञा जो करैं॥सब ही मांनैं मैं कनटै
रै॥कोटीअं ध रा जो पति वाका॥चित सूं सेव न करै जुता
का॥पुरष मरै जा दै जग सेती॥वाके संग जलै करि हेती॥प
ति कूं कष्ट होय दुष मानैं॥वाका सत्ती आपना जानैं॥२२ दोहा
मन क्रम चित रता नवैं कै षुट करम करे ए॥मांन संग नां
ही करै सेवा चित्त धरे ए॥२४॥नर ता पुन्य करै सु षमा
नैं॥पाप करै जब डष हि प्रआनैं॥ऐसे करमि करै जो ना
री॥पति समेत जा स्वरग मंझारी॥८६ लोक मैं जाय
विराजैं॥सहंस चौकड़ी लों क्षां राजैं॥रतन जडे भूष
नर है पहिरैं॥मुति पन के हि पहार जु लहरैं॥२५॥८
तिसो स... ... ... नाम व पो

२ सोधपत्र पुराना सके तो बासा दोदश वृत्तनो जजो दे नहै जजु करै वितलापु ॥ श्रोरतप स्पास्मी तहै अ पनैतननं नायु ॥ चौपई ॥ जेठमास पंचश्रग्नी तो विस्तार श्रोरही पावर आवैं ॥ पंचवीश्रगु सीस पर नाना ... पंचश्रगनी लेऊ बुलाना ॥ पूस माहि मे श्रेसें धार ... सहस धार के लेने वर ॥ टिकटी परिमट का धरिवावें ॥ सहस्त्रधुर तामें करिवावें जलतरिवातल बैठे सोई ॥ श्रेसा कष्ट करै जो कोई ॥ सो वैर तन जड़े घर पावे ॥ सो मलोक में नक्र कुल सावे ॥ २ दोहा सेंने का जो करे वा ... लोक रहाप ॥ ३ चौपई ॥ श्रासोज श्ररु कातिक जब श्रावे ॥ तिन में विप्रन कुं न्हुग तावें ॥ बी रषांड नोजें करि वावैं ॥ साथ विराहन नौतजिमा वे ॥ दिश्च नांदेटी का जबकाढै ॥ वा का धर्म श्रधिक ही बाढै पौत मा हुदे लकडी दाना बड़ा बिधदेहु जड़ाव लनांना बेश्शा षवेत श्रेसा जिनकीनां ॥ श्रनदांन मंगते कुं दी नां ॥ जेठ साढ जिनपानी प्यापे ॥ सो रनदांन दि प्रेमन्नता पे ॥ ते जीजावैं स्वर्ग मं झारी ॥ श्रानंद पावें श्रधिक श्रपा

॥ दीन द्रि... फल आगे आवैं॥ जा नां जो गरूरैं सुष पावै॥
अन पति संग ...ई कापा॥ याऊ का फल अधिक अनंता
१२ पा॥ सात कि... बहु नारी॥ रहै सूरज के लोक मंझा
रु॥ सो व... दे ब... कूं पावैं॥ पति संग करजो देही जा
वैं॥ सतमघ मांहीं ब... देही॥ सूरज तुल्य बिवान बनै ही
नदि पाटू धसहत दंषपीकी॥ अस मीठे जल ही की नीकी
४॥ दोहा॥ जहां पटंबर बादले अरु बसनन की बाहि॥ सू
रज ही के लोक कूं फा हो करि वैं जांहिं ५॥ चौपई॥ जो सूरज के
सेवग जांनैं॥ सूरही लोक बसत मन आनैं॥ सुषदाई जा
नौं वह लोका॥ जहां बसैं कबु रहै न सोका॥ अरु वा जो
के शत्रु जहां है॥ गंध्रब पला सौं रहत तहां हैं॥ ब सार नृप पह
रैं आवैं॥ गावैं नाचै ताहि रिजावैं ६ दोहा॥ जो सेवग महादे
व के पुहचैं वा के लोक॥ सुष सेती जहां रहत है नित्य नै अधि
क असोक॥ ७॥ चौपई पर कंन्या को ब्याह रचावैं॥ परमा
रथ के हेत करावैं॥ बिप्र बाल क दे हजनेऊं॥ औ सेका से
मैं चित देऊ॥ अस कोई ऐसा कार ज आवैं॥ पर कारज कें उत

३८ धावैं॥ स्वर्गलोक पावत है सोई॥ जो वैं नर नारी कोउ न
होई॥ बिना दान शिव लोक न पावैं॥ धर्म हीन कैसे करि जा
वैं॥ रतन जड़े नाना बिबा की॥ सब सोना बरनं के हाजा की
जो ब्रह्मा के सेव गहोई॥ वाके लोक बसत है सोई॥ आनंद
करैं महा सुष पावैं॥ ब्रह्म लोक कूं तो कोई जाव॥ जो ब्राह्मण
अपना धर्म राषे॥ करै सु कर्म जु पट न हिं नाषें॥ बेद पाठ सा
षे षट करमन॥ संध्या गायत्री अरु तरपन॥ शितवंती नारी
पे जावैं॥ और दिनां चित नांहि लगावैं॥ सब मनषैं सें हित
करि बोलैं॥ नित्या [illegible] गत ली मुष षोलैं॥ सील रषा हि
रदे मैं धारैं॥ सो ब्रह्मा के लोक पधारैं॥ ८॥ छत्री धर्म आ
प ने सावधान जो होय॥ बस्ती की रिछा करै लोग दुषी न
हीं को य॥ ६॥ चौपई॥ अपना अरु सबोर करि लेवैं॥ साध
बिराह्मन गऊ नु सेवैं॥ साधन की सेवा चित धरैं॥ रण
मैं जूझैं सनमुष मरैं॥ सो वे सुरग लोक कूं जावैं॥ जोगैं
ब नो गवकूं त सुष पावैं॥ [illegible] प सील जत गऊ चरावैं॥ सा
ध बिराह्मन कूं सिर नावैं॥ बोलैं सांच बचन जके मांही॥ स

तको पार अब कछु नांही ॥ सुदरसन पनेंध मैं संसारा ॥ सो
८० बेद पावतत्र पर्जो ॥ सेव ग ग कु बिरासनकेरा ॥ सपनै
गुरका मन रूचेरा ॥ कोइ अतीत और गुरनाई ॥ सेवा
करै बकु तचि त लाई ॥ ऐसे चार बरन जो लेषे ॥ चहुं बि
ज्ञानजात मैं देषे ॥ और जि नैं नेम सभी धाई ॥ लोक कांम
नो पकुचैं जाई ॥ ९० ॥ ८ तिस्या नास केतू पारषा ने सब बि
नेंनां मवतु दरोधा पा ॥ १० नासके तो बाच चो पाई
जिस जिस देव तकूं कोई धावैं ॥ वाके लोक मांहि वद जावैं ॥
ठाकुर का कोई तजना ल सैं ॥ वाके लोकु मांहि जाव सैं ॥ क
रै बिनोद महा सषकारी ॥ कैहो पुरष और कै नारी ॥ दिया
जिन्हैं रष हू ध भि ठाई ॥ नो जन हू पे महा सषदाई ॥ दिया
छी वर ससो नां रूपा ॥ वा पा करी हडी जिन धूपा ॥ मोती
माल कनु ली कपूरा ॥ दिपे टांन जिन ब स्तरपूरा ॥ बड़ बि
ध दांन करैं जो केता ॥ तीरथ बरत करैं और जेता ॥ जा का
फल मन मैं न हिं धरे ॥ सब ठाकुर कूं अरपन करै ॥ दांन करै
हरि के हित बो वैं ॥ सो बैकुंठ पराप त हो वैं ॥ ता तैं अपनां

नला करी जैं॥ धर्म पंथ मैं सदा रहीजैं॥ गुरू ब्राह्मण कूं जो मा
नैं॥ जो गृहहस्त कूं बेद बषानैं॥ जो ग्रहस्त कै साध आवैं॥ देष
त उठ कै सीस निवावै॥ आदर आसन दे बैठारैं॥ मुष सूं मीठे
बचन उचारैं॥ जथाशक्ति भोजन करवावै॥ कंदमूल जे मा
घर पावैं॥ जिन साधों का सेवन कीन्हां॥ देव पित्र सब पूज
न कीन्हां॥ साध समान जगत के मांही॥ और धरम कोई दीषै
नांहीं॥ जिनकी अस्तुति राम बषांनी॥ बेद पुरानन मैं हो जांनी
१० दोहा॥ एक समैं धर्मराय सब लीनें हूत बुलाय॥ कहा किति
र लोकी विषै हरिजन हैं अधिकाय॥ चौंपई॥ एक बात यह जा
नैं रषियो॥ मेरा कह्या जु ना कैं लहियो॥ साध रूप कूं ऐसें जानों॥
हरि की देह मिले पहिचानैं॥ वे तौ हैं परमेस्वर प्यारे॥ रहैं राम
का बानां धारैं॥ जिन के दरसन पातिग नासैं॥ जन्म मरन की कू
हैं गासैं॥ किरपा करि निज नेत्र बतावै॥ चौथ पद आनंद दर
सावैं॥ ऐसे साधन कूं कहीं देषो॥ हरि सम जिन कूं जांन बसे
षो॥ साध बसैं जहां तुम मत जइयो॥ उनके सेव गक्ष मत गहियो॥
और साध जां जिस घर मांही॥ कांनी तुम कूं जानां नांहीं॥ साधें

ना०

का सेवा करै और स्वरगा मत लेह ॥ तिन कै नी मत जाई यो
जिन सैं उन का नेह ॥ चौपई ॥ और ग्रह स्ती गाकु स्सेवैं ॥ मल्ला
८५ फेर नांम हरि लेवैं ॥ राषे बरत जागरण करैं ॥ संज्या समैं आ
रती सरैं ॥ जो गलगा करि जो अन षावैं ॥ अरु से तैं कूं सीस
निवावै ॥ जिनके घर तु मकजी न जावैं ॥ अपनी सूरत नां दिषा
वो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ परमेस्वर के पारषत उनकूं लेनें जाहि ॥ तुम तौ ह
लन जाइ पोया दरषा मन मांहि ॥ विष्म नक्र परनाव कूं और रसा
धन की बात ॥ चित्रगुपत जी नां लषें न्या वन ही उसहाय ॥ ६ चौ
पई ॥ और इक नदी स्वर्ग के मांही ॥ नार पुहप का अधिक कहा
ई ॥ सिध गंध्रुप ता निकट बिराजें ॥ देवत और धरमातम राजै
तुम बठत हैं न्हानें सेती ॥ तामैं है सौंने की रेती ॥ संष पदम ता
माहि तरे ही ॥ पुहप तरे जहां बिरवष रे ही ॥ ७ अमृत धा सीज
लहै ता के ढेर मणी का कूं लजु वा के ॥ सूरज किरनों सैं अति द
मकैं ॥ चंद्र चांदनी सों वे चमकें ॥ ८ ॥ दोहा ॥ वा के तट इक बाग है
सुष का दैन सुधांन ॥ पवन सुगंध लिये जहां बहत रहत रसा
मांन ॥ ९ चौपई ॥ देष तहां बिलास ही करते ॥ बजत नां ति

करिसुषहीधरते॥त्रिषणासजाडानहीगरमी॥सदानिरोगेहैं
कांवरमी॥बूडाबालाज्वांननदरसैं॥दुषकलेसकोकनुनप
रसैं॥कष्टनपिस्याग्रोजगकरई॥नैग्ररुदुषवेकछुनेनन
ई॥करैंकिलोलदरषसुचिपावैं॥चरनदासजोसरनिआ
वैं॥ग्ररुपतिबरताफलबकुतोगैं॥संगपुरषकेजोगाजोगी
द्वाकरतचोगजोग्रावैं॥कहालगकछुबकतसुषपावैं॥प
तिबर्तीबहुनैंननिहारी॥सुनकरमोंकीकरेनैवारी॥ग्रसजो
हैंबिबचारननारी॥उनपरिबिपतादेषीन्नारी॥जिनकुंकीमैंक
छुंबनाई॥दुराचारनीपतिदुषदाई॥१०दोहा॥षोटाचितषोटे
कर्मपुरषपराएसाथ॥चोरनजारनहैंघनीजिनकीसनौंतुबा
त॥११चौपई॥कलहसुहोरैग्रतिकंकाली॥मैलेमनकीग्रति
जंजाली॥ग्रपनेंपतिकूंदोषलगावैं॥ग्रांनपुरषसूंचित्तमिला
वैं॥जलतीरहैंहिवेकेमांहीं॥पाजगमैंजसनैकछुनांहीं॥जब
वेमरैपकडजमलेजां॥उनकूंदैंहनरकदा...मो॥चौरासीब
र्षकिरोडजुतांई॥कांसूतिहूंनिकासेंनांहीं॥ग्रष्टधातकेपुर
षबना१॥पावकसममवेग्रधिकतपा२॥जमकहैंइनकेसं

गमि लोकही॥ जार तुम्हारे गले लगो ही॥ मारि मारि केही लिप
टावैं॥ जल ते ज्वाला करहैं दुष पावैं॥ अरु जो पापी नरकों जावैं॥ ज
८६ मगज्ञा बहु पाड़ा पावैं॥ अरु ... म पौ कहैं पापी लोगा॥ षोटे
वह म कि पे अब तो गो॥ २ मूर्ष श्रेसा तन पापा॥ सो तुम पापही
मो हिंगवाया॥ एक जन्म के रुष के काजा॥ एक काल पनु ग
ना नर्क साजा॥ १ दोहा॥ बहुत दिनों तन नां रहै जान तहैंस
बकोप॥ पाप गांठ बांधे घनें अपराधी लोप॥ २ कल हदल्त डा
ई करत हैं औरन कूं दुष देत॥ त्यां जीवैं दुष पावैं ई नरक माहि दु
ष लेत॥ ३॥ पापी जीवन कूं कहैं कि कर मार रही मार॥ करम्य जौं म
ड रलन महा जनम न बार म बार॥ १८॥ बोपु नां सु न कर मही
अब लु ए ते सुष तो ग॥ तैं कीनें षोटे करम बड़ा लगा यारोग॥ १९
इ इतिश्रीनासकेतोपाख्याने विष्णुन ऋषि नारद संवादे नो नाम
पंचदशोध्याय॥ १५॥ नासकेतोवाच॥ चौपई॥ स्वर्ग लो
कहु कऔर अनूपा॥ सो वह म सु लो कमैं डीगा॥ वहु जी
व डे नागन सू पावैं॥ हरि हरि पापुन सैं बनि आवैं॥ १॥ दोहा
अत्तरजमन षादे हूं कूं स्वर्ग लोक ही जांन॥ तामें क्या पैं हो

तहै ॰ र मे स्वर व हिवान॥ चौपई॥ ऐसा स्वर्गलोक नही
हुजा॥ तामैं आके सब कुछ सूजा॥ तामैं जोगैं जो गत्र पारा
तामैं दीषै अ ति गुल जारा॥ मूरष पा का भेद न पाया॥ तामैंस
ब ब्रह्मंड समाया॥ तामैं पावैं ब्रह्म बिचारै॥ तामैं आ॰ ं तत
निहारैं॥ जाके दीषैं दसद रवाजे॥ तामै अनहद बाजे बाजे॥ क
र म धर म सब कुतै तप कीनां॥ तातैं हरि नैं नर तन दीनां॥ ऐसा
पाया स्वर्ग गंवावैं॥ कलप कलप बहुतै पछु तावैं॥ जो कोई
सां सूं गिर जावैं॥ मनषा देह बहुरनही पावैं॥ दोहा॥ मन
षा देह अनूप की कही चरन ही दास॥ और बात अब कहूं त
कुलहै स्वर्ग मैं बास॥४॥ नारी जनक बिदेह की जाका बहु
विचार॥ सुहम क शिव र॰ नक सूं ताको हिये मैं धार॥५
तन तजे कै स्वर्ग हि आई मृदंग जम पुर द्वार॥ जो कोई मृयेता
दिनां सब कुले गई लार॥६॥ आगै पी छै जोर लौं और सां
कल गजान॥ सबै जीव सर पुर गए यह तू निहचै मान॥७
सुनौ रिषी स्वर कहूं तजुं बडा अचंना जोर॥ सन्ताध मेही

राय़की मैंबी छा॥ ३ हूतौरा॥१८॥ बैठक धरमदी राय़कीता मैंस
नासु ज्ञान॥ जहा रिषबैठे गुलुजरे जिनकूं ति मिलज्ञान॥१
धरमराय़ बैगहि पै जो तारी मैं चंद॥ जदां ब्रह्मा सुतआइया
ना हूसुष का कंद॥१॥ चौपई॥ नारद रिबि सम तेज उसी का
धरमराय़ किया नावजिसी का॥ धरमराय़ तप उठ कै धाया
करि षिनामआसन बैठाया॥ अरघपाद करि पूजन कीया॥
हाथजोड बोलन फिर लीया॥ हे ब्रह्मा सुतदे रिषराये॥ हे
बुधवांन तलैं तुम आये॥ आज सुफल नया जनम हूमारा॥ जन
गत कृपा नई अपारा॥ तुमसे रिषका दरसन पाया॥ बडे
नागा जागे सुष लाया॥ यह सु नारद मुनजी बोले॥ बचन
प्रीतके मुषसूं षोले॥ नारदोवाच॥ मोकूं तु मदरसन की
इछा॥ असकु कछु पूछन आयो सिछा॥१॥ दोहा॥ तुम सब
ला यकजोग हो हे राजा धर्मराय॥ धर्म कहा अधर्म कहा मो
कूं देहु बताय॥२२॥ सोरठा॥ और कहो तुम मोहि आश्र
मचारीं के धर्म॥ सबै ज्ञान है तोहि यह मेटो मेरो भ्रम॥२

नारदके तो बाच॥ यौ नारदजी कहैं त छेजम सेती येबात॥
इ तनैं हो मैंदी बिया बहुत बिनानजु आत॥१४॥चौपई॥ अरु
बाजे बहु बाजत आवैं॥ करती नृतत्र्य सराधावैं॥ मुरली संघ
पषाव जनेरा॥ हाथी घोडे शबूघनेरा॥ ईरावत पर इंद्र रा
जा॥ कोई पालीये सब साजा॥ उसही समैं बालकी नाद लि
षि जम राज छिपा घर मांही॥ मुनी समेत तेजसा राजा॥ और
इ त सै संग गए राजा॥ अरु उसके गण ली कही लागे॥ जो कोई र
हे सो छिप नैं लागे॥ मो कूं बडा अचंभा लया॥ षडा होय क रि
देषतरहा॥ वाही समैं जुरथ ञ्जा आय॥ मानौं पुंज अगन क था
य॥ उन सूं उडे पतंगे ऐसे॥ टूटै तारे नभ मै जैसैं॥ ऐसा ढाग
उहां करि गया॥ धर्मराय फिर आबिर लया॥१५॥दोहा॥ आवे
षा सैती तसा डर तासा मन मांहि॥ पीबे सैं देष न लगा तेज ध
रे वैजा हि॥१६॥नारदोबाच॥ कोतिग बिसम समान ही ऐसे
हो महाराज॥ जद राजसके नृप तुम तीन लोक तो राज॥१७
बडा अचंभा लो मोत या डर लागे किस काज॥ ...
गए कारन क हि ...
बैठे आय॥ ...

वाच ॥ हे मुनि महाजु प्रोए हो कक्रस्तू सुनले द्वप द्विपी बात
१८ हे एक यूह सावधान चित दे सू ॥ रचौ ई ॥ पुन्न विचार संपूरण
ता मैं सुनैयो श्री तसं कंक्रकण्या मै ॥ हे मुनि म न्न लो कके मांहि ॥
पशू मानमहारा जाहीं ई ॥ सांचवचनका बोलनवारा ॥ जिसका
नांवजनक उजिपारा ॥ आपमे जन्न का कर ता जानै ॥ सत्तध
मी मैडिढप हचानै ॥ द्विमांद पात्रसता लसहित है ॥ हरिकी
सेवा कर तह तहै ॥ ज्ञानवंत सी तल सुषदाई ॥ क्रोध लो न्न
बिनरहि तसदाही ॥ वेद अर्थका जाननहारा ॥ नीत धरम
काहै रषवारा ॥ आपनी पुर जाकूं सुष देवै ॥ एक एक की सु
धही लेवैं ॥ २ दोहा ॥ जैसैं मांली बागकी रुधकूं ... लै
नांहि ॥ ओसैं आपनी सिष्टकूं राखै रिहा मांहि ॥ २२ चौ
पई ॥ दुष न्नरी गन्न दीनकर तहैं ॥ रंकनका बक्रदुषहर
रतहैं ॥ षेती सहित ... प्रकादीनो ॥ बिप्रनकूं दे करिस
नमांनो ॥ बड़ी उमरकी परजा सारी ॥ नी तधर्म सबक
रैं संन्नारी ॥ ओसा महारा जा अन्न रागी ॥ जाका नांवजनक
बड़ न्नागी ॥ जाकी नारि स ... गी ॥ जिसके चन्न एसंप
... मैं ॥ सब ... मैं ॥

ली ऐ राजें ॥ पतिव्रता अरु पति की प्यारी ॥ सदा पिया
की आज्ञाकारी ॥ नरता ही की नकै करे वा ॥ नरता ही जि
स का है देवा ॥ २३ ॥ दोहा ॥ स्वामी के दुष सें दुषी स्वामी के
सुष सें सुष ॥ स्वामी के रंग मैं रंगी और नेह सब षोय ॥ २४ ॥
चौपई ॥ जब नरता के दरसन करै ॥ पिय की अस्तुत कर
मन ल्यावैं ॥ जब ता क्रोध करै जब वा पें ॥ मीठे बचन कहै वह
हू ता पें ॥ नरता अरु सब कुटंब जिमावैं ॥ पीछे बचा आ
प जु षावैं ॥ ऐसे और बहुत गुनवंती ॥ तिरयान मैं अधि
की सतवंती ॥ पतिव्रत मैं जा न लडी ही ॥ जाती स्वर्ग बि
वान चढी ही ॥ इंद्र सहित देव बहु साथा ॥ सची लिवा वै जा
कूं माथा ॥ सची बिवान संग ग्यो जावै ॥ जम जमात कर
ते ही आवैं ॥ बाजे बजत बहुत परकारा ॥ गंध्रप गावत रा
ग बिचारा ॥ २५ ॥ दोहा ॥ चाहै जा अमरावती ॥ चाहै ब्रह्मलो
क ॥ चाहै जा वै शिव पुरा कि पे पुन्न के थोक ॥ २६ ॥ चौपई
आनंद नरता सहित जु पावैं ॥ चढी बिवानैं ऊपर जावैं ॥

-ना०

वाका तेज आचानकआया ॥ होतै ना तत्ताज मैं गया ॥
५६ घरमैं गया छिपा पहिचानौं ॥ दूत तन जे सोनी वु मजानैं
बा तौंहीं के कूर नें मांहीं ॥ दूत गए सो आए कांई ॥ सुन कैं ना
रद बकुकुलस्मायां ॥ पति बन्नौ का कुंनर पाया ॥ अरु फिर
नारद पूछन लागे ॥ सरज पुत्तर सुनैं सनागे ॥ नांन तेज
सा त नहैं तेरा ॥ ताथैं सौंन का साहेरा ॥ देह तुम्हारा रखो
रा सोहनी ॥ मुष्ष सो ब्रा कारज कैं नीं ॥ याका ना मोहि
कुतरदी जैं ॥ कहो नेद अरु किरपा कीजैं ॥ धरमराय बोले
मुसक्याई ॥ छिपी बात यह है रिषराई ॥ मेरेही ह्रदै मैं
रहीं ॥ अब लग काहु सैं नहीं कहीं ॥ ब्रह्मा सुत अब तो सू
नाषू ॥ याका नेद कबू न हिंरा षूं ॥ जिन मन षोत पदान कि
या हूं ॥ निहचै हरि को नांम लिया है ॥ २० दोहा ॥ अरु इं
द्रा मन बस किया कियो जोग हीं ध्यान ॥ हरि गुण गाए न
कि करि आराधे नावांन ॥ २८ ॥ चौपई ॥ गुरके नकूसा
षा संग कीनां ॥ हरिजन सेवेन का ब्रत लीनां ॥ छिमां सील ल
अरु दया विचारी ॥ सतवादी नये नरक्या नारी ॥ तीरथ
हरि कीर्त्तन कौ कर न कौ लाहा ॥
करिकै फल नहीं चाहा ॥ ह

इ षसुषएकबराबरजानैं॥ संतसंतोषसदा हियआनैं॥ पांच
जज्ञकरिहरिकूं अरपैं॥ फलनहीं चाहैं आपनधरपैं॥ कौंन
कौंनजज्ञसोबनलाऊं॥ जुदेजुदेकरिसबदिषलाऊं॥
मांवसअरुसंक्रायतजानौं॥ छिताषानद्वादसीमांनैं॥
और पांचवीपूरनवारी॥ हेवेंदांनरहैं निरबासी॥ आरूपच
श्रुतनीतपैंनिरासा॥ तपहीकीपूंजीजिपासा॥ २१॥ दोहा॥
षमनक्रनिहकांमजोकरैं अनन्यहीनाय॥ तनमनहरिकेंध्या
नमैंराषैचितलगाय॥ २०॥ चौपई॥ औसेसाधसंतजोआ
वैं॥ पुरीपासहोआगैजावें॥ तिनकूंदेषूनैननिहारा॥ जिन
केतेजस्यामषुम्हारा॥ पहरैंरडंकवचनन मांहीं॥ ताकूंमां
षलगतहै नांहीं॥ नारद यहतुमनिहचैकीजें॥ यहीबातहि
हैंधरिलीजें॥ धर्मरायअरुनारदमुनीं॥ दोनौंकीहमवि
तदेसुनीं॥ स्वर्गनरककीसबहीकाथ्या॥ तुमसेंकहीषो
गबाता॥ देषीनासकेतमहीरानी॥ नैंननिहारीसगरी

५० साषी ॥२१॥ इति श्री नासकेत पाख्याने जम नारद संवादो
नाम षोडशोध्यायः ॥१६॥ नासकेतोवाच ॥ दोहा ॥ और ख्यात
इक जगत मैं है परसिद्ध तकूं ॥ देषा अपनें नैंन ही सो बास
नैं कहुं ॥१॥ चौपाई ॥ जीवौं किये पिछले करम अघाय ॥ ज
नम पाय याजगत मैं सोई जुग तैं आय ॥२॥ चौपई ॥ हत गऊ
वां पातक किये नारी ॥ विषदे मनुष मारकुंडारी ॥ अप
नें गुर के घर के मांही ॥ देषैं षोटी द्रिष्ट बुराई ॥ सो निषद्ध क
याध स्त्रावैं ॥ सां चंडाल जौं नहीं पावैं ॥ मारैं राहगीर गव बकु
बोलैं ॥ सौं रोगी हो जग मैं डोलैं ॥ जो सौंना जग मांहि चुरावै
जन्म पाय कुष्टी हो जावैं ॥ जो मधरा पित्तय मतवाले ॥
नके दांत कुपैन षकाले ॥ ब्राह्मण पुस्तग पढन बिचा
पावैं जन्म नागही कारा ॥ अरु जिन पाप जानकरि कीन्ह
वांकु जन मस्वरपकाली न्हां ॥२॥ दोहा ॥ जो कंन्या कूं हन तें
कै बाहर कै ग्रेह ॥ जनम पाप ऐंहै जगत मैं होय गधे की

उचौपई॥ विपर स्त्रिय लमांस अहारी॥ देतदांन जिन कूं बृह्मचारी॥ होनैं गीदड कूं तन पावैं॥ नास कैत वृह्म षोल दिषावैं॥ जो नर परिति रया कूं ताकैं॥ पावै जनम सूर को आकै॥ जो नारी पर पुरष लुभानी॥ सो वै सूरी होती जानी॥ अरु जो दांन करत कोई रोकै॥ पाठ लहैं वृह्म घोडा होकै॥ जूठा करि ब्राह्मण कूं देई॥ सो तौं जनम बाज का लेई॥ जो कोई धरी धरोहर नांटै॥ अरु पंछी के पर जो काटै॥ सो विष्टा के कीडे जानैं॥ उन कूं पापी अधिक पिछानैं॥ काहू के जो बसन चुरावैं॥ सो वे नर धोबी होआवैं॥ और जिन मैं तीरत न चुराया॥ अपनां बांदमार गंवाया॥ सो होवैं पथ्थर के कीडा॥ निह्चै पावैं किरम सरीरा॥ दोहा॥ सब विधदेव जो गहैं नही देन वेरांन॥ मनैं करैं जो और देवा गहैं जग आंन॥ चौपई॥ जो कुदिष्ट आंष नसूं देषैं॥ अंधे काणे होत वसेषैं॥ झगरा विवाद बढावैं॥ सो कछुवे की काया पावैं॥ जो कोई परि

५१ काहूकबचुरावै॥ सो तौ जनम ऊलू होआवें॥ ऊलू देह तजबंदरहोवैं॥ जनम अठारह निहचे षोवैं॥ जोकोइ बेटीहो तीमारैं॥ सोघिरघटकीका याधारैं॥ जोकाहू कासूत मुसावैं॥ होयनहारू बकहू षपावैं॥ गुलीकपूर कपासचुरावै॥ सोमकडीकीदेही पावैं॥ जोकाहूकीतो रैपनहीं॥ जनम लेतच कचूं धरतनहीं॥ दू॥ दोहा॥ जिन काहूकेफलचुरा मानीनोही संक॥ तेनरहस्तीहोय करिसिरमैंषावैं अंक॥ ७॥ गुरूबाह्मण काछितिपाजानैं कूंसचुराय॥ कालाहोवैसरपहीमा रूदेसमैंजाय॥ ८॥ चौपई॥ बिप्रसाधपैरीं जिनमारे॥ जनमतपिंगलनरबि चारे॥ जोब्राह्मनकूं मधरापावैं॥ कूंकरजोंनसोइहो आवैं॥ जोकाहूका अन्नचुरावै॥ होवैबहुरासु नांनजा वै॥ काहूसैंकीनोकुछ्याई॥ वैतो मृगहोंबनजाई॥ आ पगुरूहोगुरूनकीन्हो॥ सोबिलावहो तामचीन्हो॥ बहकाट जोफूलचुरावै॥ जोनपपीहाकीवैंपावैं॥ नि

नषत क्रोध नहीं हरषावै॥ सोवै जैंन मोल हो धावैं॥ जो क्र
क्रा की निंद्या करै॥ जैंन क्रो कला की वै धरै॥ ९॥ दोहा॥ हरि
केन्नो गल गैं बिनाषा पुर सोई क्रोय॥ चरनदास यों कह तहैं
जैंन का गकी होय॥ १०॥ चौपई॥ दे करि दांन बहुर पछुतावै
सो तौं जैंन नेड की पावै॥ जली बस्त द्विप करि जो षावैं॥ कुट
व मिंत्र कूं ना हि दिषावैं॥ सो होवैं बले की देही॥ कपट रूप धार
तहैं वे ही॥ जो अन्न न हो ती लडै लडाई॥ सो जगल मृग षी हो जाई॥ जि
न से वा पति की नहीं रोपी॥ सो त्रिर या तन धरैं ज लो की॥ जिन
सत गुर की बस्त चुराई॥ अजगर प्रेत होत बिर मांही॥ राषें कप
ट सी सब कू ना वैं॥ सो पापी चीता हो अ वैं॥ ज्ञान सी षगुर सैं फि
र जावैं॥ सो सरीर कोढी को पावैं॥ ११॥ दोहा॥ षोटे करमन सों
स बै चौं रासी मैं जांहि॥ कहा लौं गिन तीमैं करूं सम ऊं दे ष म
न मांहि॥ ११॥ ६ तिष्टी ना सके तू पारखाने कर्मी नुसार जो न प्रा
प्त बनने तो नाम सत दशी धा प्रा॥ १७ ना स्के तो पाव चौपई॥ जि
न मन बैंसे कहीं माना॥ वृत्ती रूप जान नहीं गना॥ बिस

न क्रमैं मननहीं दीनां। गुर सेवा का नेम नली नां॥ साधों की सेवा नहीं जानी॥ तीरथ किये न परबत न्हानी॥ गुरका कबहूं ना मन लाया॥ कबहूं पापी हो मन की या॥ परमेस्वर का जप ना हीं साधा॥ जो गजगाव नारी सारा धा॥ पांचों इंद्री जस वहूं कीनी तलिब रस काहू नहीं दीनी॥ कथा कीर तनमें नहीं गया॥ हरिसें बेमुष हो हीन या॥ जिन नर ऐसी चाल बिसारी॥ सो डूब तहै नरक मंझारी॥ दोहा॥ जिन पूजे है देव ता हो मजग ... रिदान॥ ना सके तदे षी कहै स्वर्ग लहै वह जान॥ २॥ चौपई॥ धरमराय जब पकड बुलावै॥ पापपुन्य का न्याव चुकावै॥ पापी पठवै नर्क मंझारा॥ पुन्नी पठवै स्वर्ग संचारा॥ पापपुन्य छीन हो जावै॥ फिर वै मृत्यु लोक में आवै॥ पापी देह निषद जो पावै॥ पुन्नी मनु ... उ ऊल सावै॥ धनवंते उत्तम घर जनमै॥ नलेचलेल बुने आवै ति न मैं॥ अरु जो चौरासी मैं का ढै॥ मनुष देह धर कुं चेवढै॥ बोटेल बुन तन के मांही॥ चरनदास कहै निह चै आई॥ जिन के जीव जहां ई जांई॥ पहमत बेद पुरानन गाई॥ साध संत कोई उतरै पारा॥ और चौरासी ... मंझारा॥ सुनी रि

षास्वर ... गा ... जब ... मोगा ... स्तुत करि मन
हरषाये॥ अपने अपने अस्थल आये॥ दोहा॥ तास केत की क
संसकृत के मांहि॥ चरनदास नैं सो करी ऊं ... आपनी नाहि॥ ४॥ पढा
लिषा मैं कुछ नहीं सतगुरदी नैं ज्ञान ... रनजी ता ग्रौं कहै तहै ता
ही की पहिचान॥ ५॥ कथा जु अपि करु हांवनी सुन्त करि उपजै
चावै॥ दयाधर्म हिये आवसैं ताजैं सबै कुतावु॥ ६॥ सुनकर
जो रहनी रहै मन मांही फिलैह॥ पाप निकट आवैं नहीं
जमनाही ... बदैह॥ ७॥ कथा सुनैं चितव मकरै समझ धरै मन मां
हि॥ पवन नरक की नाल गै पात गरु ... न सां हि॥ ८॥ सुन करि र
हनी नां रहै चलै न या की चाल॥ चरनदास यौं कहत हैं ता हिन
रक नत काल॥ ९॥ सुन करि मन लावै नहीं तामैं चित नहीं दैं॥ जीवत
निफल ही रहैं मुयै नरक का जै॥ १०॥ जन्मे जैं की साषही कहुं सुनैं चि
त लाय॥ कुष्ट अठारह हा ... कुं ते सुनकरि गए न साय॥ ११॥ तास केत नै
सी कथा जैं साध मै जिहाज॥ जन्मे जैं ता पार चढा कुष्ट गए सब ताज
१२॥ षेव टिया ... ब्यास सब बचन ... ग ... ॥ जगत सिंह सम

का

त मोनयें धर्म जिहाज पिछान दे [illegible] तें गत्र [illegible] चढि से सागर तरै पा

५२ र आरहजाहें अभिमान सों सो [illegible] बे म जधार ॥१४॥ सतगुर बि

नइ बैसन्नी रांम भक्ति नहीं जांना सत संगत आवें नहीं करि

कै बडो अभिमान ॥१५॥ नासकेत की कथा कूं कहै सुनै चित ला

य ॥ पाप तजै अरु पुन [illegible] रै ब सै स्वर्ग वहजा ॥१६॥ सुषदेव के

परताप सूं कह्यो नासकेत ॥ पाप पुन्य के भेद कूं समझ जन का

रन हेत ॥१७॥ इति श्री चरनदास जी कृत नासकेत पा

ख्याने सुता पुनि [illegible] पूर्व वर्नो नाम अष्टादशो

ध्याय ॥१८॥ संपूर्ण समाप्तं ॥

॥ [illegible] समान [illegible] सकल सरीर [illegible] बहु उतन

[illegible] हु [illegible] सीता [illegible] १ [illegible] की तासो [illegible] हेता के

[illegible] पानी चढ च [illegible] तजे न [illegible] चंद्र [illegible]

[illegible] पोद कीसि हू [illegible] रता उ [illegible]

[illegible] पंडित और [illegible] सा दुसमता नि [illegible] स्वद रि [illegible] रते

र [illegible] तंत [illegible] ॥१॥

[illegible]